आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019



# शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 14 | उदयपुर बुधवार 01 अगस्त 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

## पत्रकार, पाठक, लेखक और समीक्षक

-सुरेश पंडित-

पिछले आम चुनाव के बाद पेड न्यूज की काफी चर्चा रही। प्रबुद्ध लोगों ने उन मीडियाकर्मियों को जी भर कर कोसा, जिन्होंने पैसा लेकर व्यक्ति या पार्टी विशेष के बारे में प्रायोजित समाचार प्रकाशित-प्रसारित किए। हालांकि वे केवल अपने मालिकों के निर्देशों का पालन कर रहे थे। उनका कसूर केवल इतना था कि वे पेट पालने के लिए वह सब कर रहे थे जो उन्हें नहीं करना चाहिये था लेकिन इस तथ्य की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया कि पेड न्यूज की तरह पिछले काफी समय से पेड रिव्यूज भी प्रकाशित-प्रसारित हो रहे हैं। पत्रकारों ने जो कुछ मजबूरीवश किया उसे समीक्षक स्वेच्छा से या जानबूझकर कर रहे थे। रिव्यू का अर्थ होता है पुनरावलोकन या फिर से जांचना यानी जो कुछ पढ़ने-लिखने से रह गया उसका पुनर्दशन करना।

हिंदी में इसके लिए समीक्षा शब्द प्रचलित है। इसकी जरूरत इसलिए पड़ती है कि पाठक-दर्शक कोई चीज पढ़ने-देखने से पहले यह जान ले कि उसमें क्या ग्राह्य है और क्या नहीं। इस तरह समीक्षक का दायित्व बन जाता है कि वह पाठकों को सही राह दिखाये। यह काम तभी हो सकता है जब समीक्षक की दृष्टि पूर्वग्रह ग्रस्त न हो। पूरी तरह निष्पक्ष हो। उसे ध्यान में रखना होता है कि उसकी राय पर पाठक विश्वास करता है, इसलिए वह उसके साथ विश्वासघात न करे।

अंग्रेजी में रिव्यूज बहुत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। उन्हें प्रकाशित करने वाली पत्र-पत्रिकाएं सदा ध्यान रखती हैं कि उनका पाठकवर्ग कहीं वंचना का शिकार न हो जाए क्योंकि ऐसा होने पर केवल उनके समीक्षकों की ही नहीं, उनकी भी साख गिरती है। विश्वसनीयता भंग होती है।

पर हिंदी की महिमा अपरंपार है। यहां कोई भी व्यक्ति समीक्षक बन जाता है। परिणाम यह हो रहा है कि समीक्षकों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है और इस भीड़ में वे समीक्षक भी शामिल कर लिए गए हैं जो अपना दायित्व पूरी ईमानदारी से निभा रहे हैं। इन दिनों समीक्षा कई रूपों में प्रकट हो रही है। वह पत्र-पत्रिकाओं के अलावा पुस्तकों की भूमिकाओं, उनके फ्लैपों और पृष्ठभाग पर छपे विशिष्ट महानुभावों के कथनों के रूप में भी देखी जाने लगी है।

इनमें लोकार्पण का नाम भी अब जुड़ गया है। कहना न होगा कि लोकार्पण का अधिकतर आयोजन प्रायोजित होता है। इनमें प्राय: प्रशस्तिगान ही होता है। कमियों या कमजोरियों का उल्लेख ढूंढ़े नहीं मिलता। इससे यह सुखद अनुमान लगता है कि अब हिंदी के लेखक उस परम पद पर पहुंच गए हैं जहां उनके कुछ असंगत या अनुचित करने की संभावना शून्य रह जाती है।

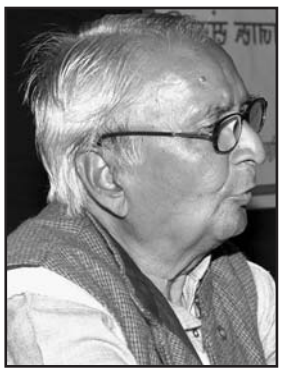

लेकिन क्या सचमुच ऐसा है या समीक्षकों ने भी अपना वोट बैंक बनाए रखने के लिए तुष्टीकरण की नीति पर चलना शुरू कर दिया है। यह तय कर लिया है कि आम पाठक चाहे जो सोचे, अपने समर्थकों की संख्या बढ़ती रहनी चाहिये। वैसे यह सब अटपटा नहीं लगना चाहिये क्योंकि जब मालिकों की इच्छा के मुताबित पत्रकार खबर लिख प्रसारित कर सकते हैं तो समीक्षक अपने लोगों को खुश करने के लिए समीक्षाओं का उपयोग क्यों नहीं कर सकते।

इससे उन्हें अपने बाजार-भाव में मंदी आ जाने का भय हो जाता है। यह मंदी उन्हें हवाई अथवा फर्स्ट एसी वाली रेल यात्राओं, वहां खान-पान के अवसरों, सम्मान स्वरूप मिलने वाले कीमती उपहारों और लिफाफों से वंचित कर सकती है।

यह लालसा कई बार इतनी प्रबल हो जाती है कि मूर्धन्य समीक्षकों को भी विश्व, राष्ट्रीय और राज्य पुस्तक मेलों में इसलिए घूमते देखा जा सकता है कि अगर किसी लेखक-प्रकाशक को कोई लोकार्पणकर्त्ता न मिल रहा हो या कोई विवशतावश नहीं आ सका हो तो इनकी सेवाएं सुलभ हो जाएं।

इन समीक्षकों की विशेषता है कि वे सर्वज्ञ होते हैं। इसलिए साहित्य की किसी भी विधा में लिखी पुस्तक पर साधिकार लिख-बोल सकते हैं। कई बार तो यह भी देखा गया है कि पुस्तकों को बिना पढ़े भी वे उन पर घंटों बोल देते हैं।

किसी भी कृति को कालजयी बना देना उनके बाएं हाथ का खेल होता है। अपने लक्षित नायक को बड़ा बनाने के लिए वे किसी भी चर्चित लेखक को छोटा कर सकते हैं। उसके साहित्य को कूड़े में फैंकने लायक और पुस्तकों में से ऐसी विशेषताएं ढूंढ़ कर ला सकते हैं जो उनमें होती ही नहीं या जिनका पता लेखक तक को नहीं होता।

वैसे अब समीक्षा-लेखन के क्षेत्र में कई तरह के प्रयोग भी हो रहे हैं। उनमें एक है- लेखक का खुद अपनी पुस्तक की समीक्षा लिखना और उसे किसी बड़े समीक्षक के नाम से छपवा देना।

एक नए दलित लेखक ने जो बड़े अधिकारी हैं और अपनी पत्नी के संपादन में एक पत्रिका भी निकालते हैं, यह घोषणा कर सबको चौंका दिया कि जो भी उनके उपन्यास की सर्वाधिक श्रेष्ठ समीक्षा लिखेगा उसे पुरस्कार दिया जाएगा। तात्पर्य यह है कि आज के बाजारवाद ने लेखक को लेखक कम आत्म-प्रचारक या सेल्समेन अधिक बना दिया है। उसे पुस्तक लिखने में इतना श्रम नहीं करना पड़ता जितना उसे प्रकाशित करवाने, समीक्षा लिखवाने और लोकार्पण करवाने में करना होता है।

समीक्षक लेखक की मजबूरी को समझता है। इसलिए स्थिति से लाभ उठाने में वह कोई कसर नहीं छोड़ता। लेखक को यह भ्रम रहता है कि जगह-जगह उसकी पुस्तक की समीक्षा छपने या भव्य लोकार्पण समारोह आयोजित होने से वह चर्चा में आ जाएगा लेकिन ऐसा होता नहीं। वह तो प्रकाशक की व्यावसायिक चतुराई से ही बढ़ती है। सच्चाई यह है कि अब पुस्तकों की आयु अधिकतम एक वर्ष हो गई है। लेखन में भी इतनी कठोर प्रतियोगिता है कि बाजार में कोई पुस्तक ही स्थायी या दीर्घकालिक महत्व बनाए रख पाती है। इसलिए लेखक को चर्चा में आने और बने रहने के लिए कई तरह के प्रयास करने पड़ते हैं।

राजधानी में कई स्वनामधन्य समीक्षक ऐसे भी हैं, जिनका काम लेखक को उपकृत करना रह गया है। वे सालों पहले किसी तरह के मौलिक लेखन से संन्यास ले चुके हैं। अब वे केवल समीक्षाएं लिखते या पुस्तकों का लोकार्पण करते हैं। इनमें कम परिश्रम और अधिक यश, अर्थ प्राप्त होता है। उनकी कुछ ऐसी छवि बन गई या बना दी गई कि हर छोटा-बड़ा लेखक उनकी लेखनी का प्रसाद पाना चाहता है। गोया ये ऐसे पारस पत्थर हों जो किसी भी तरह के लोहे को सोने में बदल सकते हैं।

आश्चर्य है, पेड न्यूज के लिए पत्रकारों की लानत-मलामत की जाती है। उनकी नैतिकता पर अंगुली उठाई जाती है लेकिन पेड रिव्यूज के लिए किसी समीक्षक के विरूद्ध कभी एक शब्द भी सुनने को नहीं मिलता। अफसोस है कि इस क्षणिक या बिना परिश्रम के अर्जित लाभ की प्रवृत्ति से हिंदी साहित्य को कितना नुकसान हो रहा है, इसे शायद ये समीक्षक नहीं समझते या समझना ही नहीं चाहते।

सही समीक्षा लिखने वाले लेखक संदेह की दृष्टि से देखे जाने लगते हैं। साख गिरने का मतलब है समीक्षा का निरर्थक होते जाना। समीक्षा जब अपना अर्थ खोती है तो वह सामान्य पाठकों की इच्छा को नष्ट करती है। पाठकों की संख्या में गिरावट की एक वजह इस तरह की ठकुरसुहाती समीक्षा को भी माना जा सकता है। नहीं तो पाठक के कम होने का विलाप हिंदी में ही क्यों हो रहा है, क्यों यह संकट विश्वव्यापी नहीं है जबकि पुस्तकों का मूल्य अधिक होने, जीवन के व्यस्त होने, टीवी के घर-घर पहुंच जाने जैसी स्थितियां तो विदेशों में भी न केवल हैं, बल्कि यहां से अधिक हैं।

*कहना न होगा कि लोकार्पण का अधिकतर आयोजन प्रायोजित होता है। इनमें प्राय: प्रशस्तिगान ही होता है। कमियों या कमजोरियों का उल्लेख ढूंढ़े नहीं मिलता। इससे यह सुखद अनुमान लगता है कि अब हिंदी के लेखक उस परम पद पर पहुंच गए हैं जहां उनके कुछ असंगत या अनुचित करने की संभावना शून्य रह जाती है।*

*लेकिन क्या सचमुच ऐसा है या समीक्षकों ने भी अपना वोट बैंक बनाए रखने के लिए तुष्टीकरण की नीति पर चलना शुरू कर दिया है। यह तय कर लिया है कि आम पाठक चाहे जो सोचे, अपने समर्थकों की संख्या बढ़ती रहनी चाहिये। वैसे यह सब अटपटा नहीं लगना चाहिये क्योंकि जब मालिकों की इच्छा के मुताबित पत्रकार खबर लिख प्रसारित कर सकते हैं तो समीक्षक अपने लोगों को खुश करने के लिए समीक्षाओं का उपयोग क्यों नहीं कर सकते।*

*इन समीक्षकों की विशेषता है कि वे सर्वज्ञ होते हैं। इसलिए साहित्य की किसी भी विधा में लिखी पुस्तक पर साधिकार लिख-बोल सकते हैं। कई बार तो यह भी देखा गया है कि पुस्तकों को बिना पढ़े भी वे उन पर घंटों बोल देते हैं। किसी भी कृति को कालजयी बना देना उनके बाएं हाथ का खेल होता है। अपने लक्षित नायक को बड़ा बनाने के लिए वे किसी भी चर्चित लेखक को छोटा कर सकते हैं। उसके साहित्य को कूड़े में फैंकने लायक और पुस्तकों में से ऐसी विशेषताएं ढूंढ़ कर ला सकते हैं जो उनमें होती ही नहीं या जिनका पता लेखक तक को नहीं होता।*

*यह घोषणा कर सबको चौंका दिया कि जो भी उनके उपन्यास की सर्वाधिक श्रेष्ठ समीक्षा लिखेगा उसे पुरस्कार दिया जाएगा। तात्पर्य यह है कि आज के बाजारवाद ने लेखक को लेखक कम आत्म-प्रचारक या सेल्समेन अधिक बना दिया है।*

खोज-खबर

# विविध वैभव के पाठे

पहले विवाह के लिए जरूरतमंद लोगों को गणेशजी अर्थ उधार दिया करते थे जिसे कौल के अनुसार किश्तों के रूप में चुकाना पड़ता था परन्तु जब इसका निर्वाह होते नहीं पाया गया तो गणेशजी रूष्ट हो गए और अब वह प्रथा समाप्त हो गई। ग

णेशपाठा गणेशजी का ही प्रतिरूप है जो विवाह, शादियों में गणेश स्थापना पर लगाया जाता है। इससे पूरे विवाह में गणेशजी की उपस्थिति में बिना किसी विघ्न-बाधा के विवाह की रस्म पूरी हुई मानी जाती है।

विवाह विषयक सम्पूर्ण रदसद को बढ़ाने वाले भी गणेशजी ही हैं। इस विषयक जो गीत गाये जाते हैं वे वरद-वरदड़ी कहलाते हैं। दोवड़े के दिन हल्दी मिले आटे के पांच गणेशजी बनाये जाते हैं। इसके पश्चात वधू पक्ष वाले शादी के दिन तथा वर पक्ष वाले बरात लौट आने के दिन माया के कमरे में दीवाल पर गणेशपाठा लगाते हैं जिसकी वर-वधू पूजा-अर्चना करते हैं।

भाद्रपद तथा माघकृष्णा चतुर्थी को गणेश चतुर्थी मनाई जाती है। इस दिन गणेशजी का व्रत रखा जाता है और उनकी सेवा-पूजा की जाती है। कहीं-कहीं गणेशजी के नाम के मेले भी आयोजित होते हैं। गणेश पौराणिक देवता हैं। गणेश पुराण में इनकी उत्पत्ति एवं महिमा का बड़ा विस्तृत और सरस वर्णन मिलता है।

दीवाली हिन्दुओं का प्रसिद्ध

त्यौहार है। नये वर्ष का प्रारम्भ भी इसी दिन से माना जाता है। व्यापारी इस दिन धनदेवी लिछमी की पूजा कर अपने नये बही-खातों का प्रारम्भ करते हैं। रात्रि को पूजन के समय लिछमीजी का पाठा पूजा जाता है। पाठे में लिछमीजी के साथ-साथ गणेशजी भी दिखाये जाते हैं। रामदेवजी को हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही बड़े आदर की दृष्टि से मानते हैं। मुख्यत: निर्बल जातियों में इनकी भरपूर मान्यता है। रूणेजा में इनका प्रसिद्ध मंदिर है और इनका प्रसिद्ध तीर्थस्थल भी यही है जहां भाद्र माह में विशाल मेला लगता है। रामदेवजी के पाठे में उनका मंदिर जिसमें पूजान्तर्गत उनके पगल्ये, पास में डालीबाई आरती करती हुई तथा पीछे उनका घोड़ा दिखाया जाता है जो शक्ति का अवतार माना जाता है। रक्षाबंधन पर श्रवण के पाठों में श्रवण अपने अंधे माता-पिता को कावड़ में लिए तीर्थयात्रा कराता हुआ दिखाया जाता है।

तेजाजी के पाठे में नाग द्वारा तेजाजी को डसते हुए दिखाया जाता है। रामसवारी में भगवान राम को इन्द्र के एरावत हाथी पर सवार हुए दिखाया जाता है। उनके आगे भक्त हनुमान अपने हाथ में पताका लिए चल रहे होते हैं। यह पाठा लंका विजय के पश्चात अयोध्या लौटने पर विशाल जुलूस के स्वागत का प्रतीक है। रामलीला विषयक पाठों में राम-लछमण-सीता का वन गमन, राम-लछमण-सीता के साथ हनुमान अपने हाथ में पताका लिए, अशोकवाटिका में सीता को मूंदरी देते हुए हनुमान जैसे पाठे विशेष प्रचलित हैं। कृष्णलीला विषयक पाठों में कृष्ण का गायें चराना दिखाया जाता है। नौ गायों वाले इस पाठे में दो हरी, दो लाल, दो गुलाबी, दो आसमानी टिपकियों वाली तथा एक सफेद गाय दिखाई जाती है। इसके अलावा अन्य पाठों में कृष्ण राधिकाजी को चांद दिखाते हुए, गो-दोहन करते हुए कृष्ण, दही-बिलोती माता यशोदा द्वारा से मटकी से माखन खाते हुए कृष्ण, गोपियों से दही खाते हुए कृष्ण आदि दिखाये जाते हैं।

शिव-पार्वती नामक पाठे के साथ एक तरफ गणेश और दूसरी तरफ कार्तिकेय खड़े हुए दिखाये जाते हैं। धर्मराज के पाठे में हरी घोड़ी पर धर्मराज लाल पोशाक में सवार हैं। उनके एक तरफ काला तथा दूसरी तरफ गोरा भैरू हैं। शिवलिंग नाम पाठे में सर्पराज को लिंग से लिपटा हुआ बताया गया है।

इसी प्रकार हंस की सवारी में हंसमाता, शेर की सवारी पर नारसिंघी माता जिसके आगे गोरा तथा पीछे काला भैरू, ऊंट पर रेबारीदेव जिनके साथ दो लाल, एक गुलाबी, दो हरे तथा एक आसमानी ऊंट बताये गये हैं। उपर्युक्त सभी पाठे काले, हरे, लाल, गुलाबी तथा पीले रंग से कोरे जाते हैं। मुख्यत: इन्हें जोशी-चितेरे कोरते हैं।

**-डॉ. तुक्तक भानावत**

# जापानी कठपुतलियां

जापान की कठपुतली कला का इतिहास प्राचीनकाल के कर्मकाण्ड से सम्बन्धित है। उस समय आज की

प्लास्टिक की कठपुतली नहीं अपितु काठ की बनी होती थी जिसे सुन्दर रेशमी वस्त्रों से सुसज्जित किया जाता था। इसका प्रदर्शन कर्मकाण्ड के लिए होता था तथा यह माना जाता था कि यह कृषि तथा मत्स्य उत्पादन में वृद्धि कर सकेगी। जापानी कठपुतलियों में जिन्हें 'ओशिरा' कहा जाता था, एक स्त्री तथा दूसरी घोड़े के वेश में सुसज्जित गुड़िया होती थी। स्त्री गुड़िया जन्मदात्री का प्रतीक थी जो एशियाई सभ्यता की एक प्रमुख विशेषता है। घोड़ा सम्भवत: पुरुष शौर्य का प्रतिनिधि रहा होगा। यद्यपि आरम्भ में गुड़ियाओं को स्त्री तथा घोड़ा का प्रतीक कल्पित किया था लेकिन बाद में उन्हें वास्तविक दैहिक स्वरूप दिया गया।

सौलहवीं शताब्दी में जापानी कठपुतली कला में क्रांतिकारी परिवर्तन तब आया जब नृत्य के साथ-साथ चीनी वाद्य यन्त्रों का भी प्रयोग किया जाने लगा। इसी समय समीसेन नामक वाद्य यन्त्र का आरम्भ हुआ जिसका ढांचा सांप की चमड़ी से बनता था। बाद में इसके लिए बिल्ली की चमड़ी का प्रयोग किया गया। जापान की कठपुतली कला की प्रमुख परम्परागत शैली बुनराक्य के अनुसार समीसेन का प्रयोग सूत्रधार की स्वर शैला का अंकन करने, कठपुतली के स्पन्दन को नियमित करने तथा दृश्य की भावदशा को अनुरूप बनाने के लिए किया जाता था।

**मिट्टी की पुतलियां :**

समय के साथ-साथ काठ की बनी कठपुतलियों का स्थान मिट्टी निर्मित कठपुतलियों ने लिया। लगभग एक शताब्दी तक ये कठपुतलियां जापान की कला की दुनियां में छा गई लेकिन सफलता के सर्वोच्च शिखर पर जाने के बाद इस कला का पतन आरम्भ हुआ। इसके कलाकार इसकी लोकप्रियता से इतने आश्वस्त हो चुके थे कि वे इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं करना चाहते थे।

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उमुरा बुनरा क्यूकैन नामक जापानी कलाकार ने अकेले ही नई शैली का प्रतिपादन किया जिसमें जापानी संस्कृति को समाहित किया गया। बुनरा क्यूकैन कुछ ही समय में इतना लोकप्रिय हो गया था कि उसके नाम से अथाह भीड़ उमड़ पड़ती थी लेकिन भाग्य ने अधिक समय तक उसका साथ नहीं दिया। कुछ समय बाद बुनरा क्यूकैन का पूरा थियेटर आग को समर्पित हो गया लेकिन उस महान कलाकार की कठपुतली शैली आज भी जापान में लोकप्रिय है।

**नई शैली का जन्म :**

जापानी कठपुतली की इस शैली के अन्तर्गत लगभग एक-एक मीटर लम्बी गुड़ियाएं होती हैं जो विशेष प्रकार की लकड़ी से तराशकर बनाई जाती हैं। प्रत्येक गुड़िया को तीन कलाकार संचालित करते हैं। एक उसके सिर तथा दायें हाथ को नियंत्रित करता है तथा अन्य दो कलाकार बायें हाथ तथा टागों को नियंत्रित करते हैं। आमतौर पर कनिष्ठ कलाकार टांगों का संचालन

करते हैं लेकिन जो कठपुतली के सिर तथा दायें हाथ को नियंत्रित करता है वह प्रमुख कलाकार होता है।

प्रमुख कलाकार अलंकृत वस्त्र धारण करता है तथा कनिष्ठ कलाकार कत्थई गाउन पहनते हैं। प्रदर्शन के आधा घंटे पूर्व तक कोई भी कलाकार नहीं बोलता। कत्थई वस्त्रधारी एक कलाकार अन्य कलाकारों के वस्त्र लाता है जो वे दर्शकों की ओर पीठ करके पहनते हैं। जैसे ही उनकी पीठ दर्शकों की ओर हो जाती, यह इस बात का प्रतीक है कि दर्शक उनकी उपस्थिति को भूलादें। यह प्रदर्शन प्रात:काल से आरम्भ होकर शाम को देर तक चलता रहता। दर्शकगण खाना अपने साथ लाते तथा उसे देखकर ही उठते।

**धागा पुतली :**

बुनराक्यू शैली के अतिरिक्त जापान में धागों से संचालित कठपुतलियों के खेल भी प्रचलित हैं। कभी-कभी तो एक कठपुतली को बीस-बीस धागों द्वारा चलाया जाता है। हाल ही में बुनराक्यू शैली का ही एक सरल रूप सामने आया है जहां केवल व्यक्ति ही कठपुतली को गतिशील स्टूल द्वारा, जिसके वह स्वयं बंधा रहता है, संचालित करता है। जापानी कठपुतली का सर्वाधिक लोकप्रिय कलाकार 'कवैजिरी' है जो किसी एक परम्परा से बंधा नहीं रहा। उन्होंने यूरोपीय कठपुतली कला की बारीकियों को भी समझा है तथा जापान की प्रचलित शैलियों को भी स्वीकारा है। अपने कठपुतली खेलों में वे राजनीतिक प्रकरण का भी प्रयोग करते हैं, जैसे उन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका का वियतनाम पर शासन विषय पर कठपुतली प्रदर्शन बहुत अच्छा किया था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उन्हें दो बार जेल भी जाना पड़ा तथा उनका रंगमंच नष्ट-भ्रष्ट भी कर दिया गया था।

**-साधना गर्ग**

स्मृतियों के शिखर (57) : डॉ. महेन्द्र भानावत

# हर दिल अजीज थे डॉ. प्रकाश 'आतुर'

राजस्थान के रचनाधर्मियों में डॉ. प्रकाश 'आतुर' का नाम अग्रणी है। साहित्य की विविध विधाओं में उनका अवदान महत्वपूर्ण रहा। वे राजस्थान साहित्य अकादमी के उल्लेखनीय अध्यक्ष रहे। उनमें सहज सरल मन, सहज सौहार्द्रपन और सहज मिलनसारिता के अद्वितीय गुण थे। सन् 1958 में बी. ए. पास कर मैं उदयपुर आया तब पहलीबार नौकरी की तलाश में उनके पास गया था। वे चौगान के खुणे शिक्षा भवन में हेडमास्टर थे। उनके लिए मैं नितान्त एक अनजान छोकरा था सो हम दोनों एक-दूसरे को पूरा देख भी नहीं पाये पर स्मृतियां कई बार छोटी से छोटी आई-गई को भी कैद कर लेती हैं जो समय पर याद करने से चित्रपट सी हो आती हैं।

कविता करने का यह आनंद रहा कि झटपट सारे साहित्यिकों से सम्पर्क हो गया फिर 1961-62 में एम. बी. कॉलेज में प्रवेश लिया तो एम. ए. फाइनल में डॉ. प्रकाश 'आतुर' का सप्ताह में एक पीरियड था। कभी उस दिन छुट्टी रहती तो कभी नगण्य उपस्थिति के रहते एक दिन उन्होंने ही कह दिया कि 'अब तुम ही पढ़ लिया करो यार' लेकिन उनसे मिलना बराबर होता रहता। याद आता है, साहित्यिक प्रतियोगिताओं का जिम्मा उन्हीं का था सो कविता प्रतियोगिता में कई छात्रों ने भाग लिया। मैंने भी नई कविता के रूप में 'कोट हैंगर और मैं' कविता पढ़ी थी। परिणाम निकला तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैं प्रथम घोषित किया गया था।

उसके बाद तो जहां-तहां कवि गोष्ठियां, कवि सम्मेलन होते वहां उनके साथ कविता पढ़ने का सिलसिला बना रहता। आकाशवाणी केन्द्र में जब-जब भी कवि गोष्ठी होती, शहर के अनेक चर्चित कवियों के साथ भाग लेने का सुख मिलता। इनमें प्रमुख होते, नंद चतुर्वेदी, प्रकाश 'आतुर', मंगल सक्सेना, देवकर्णसिंह, सुधा गुप्ता, भगवतीलाल व्यास, प्रभा वाजपेयी, आबिद अदीब, ओंकारश्री, कमर मेवाड़ी, शंकर क्रन्दन, किशन दाधीच, वृद्धिशंकर त्रिवेदी आदि। हिन्दुस्तान जिंक में डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी की अगुवाई में कविता-पाठ का भी हमने खूब आनंद लिया। बाहर भी कई जगह कवि मंचों पर हमारी भरपूर विनोदगिरी जुड़ती, जमती। श्रोताओं के लिए यादगार बनती। संस्मरणों की जैसे कई खदानें भरी पड़ी हैं।

वह दौर 'उपनाम' रखने का दौर था। अनेक तो अपने उपनाम से ही जाने गये। उनका पूरा नाम बहुत कम ही जान पाये। दिनकर, निराला, प्रसाद, सुमन, नवीन, बच्चन, मुकुल ये सारे स्थापित उपनाम हैं। कुछ नाम ऐसे हैं जिन्होंने अपनी पहचान आधेनाम और उपनाम के साथ बनाई। ऐसे नामों में धर्मवीर 'भारती', कन्हैयालाल 'नंदन'। उपन्यास सम्राट धनपतराय तो प्रेमचंद के नाम से ही जाने गये।

माखनलाल चतुर्वेदी ने अपना उपनाम 'एक भारतीय आत्मा' रखा था पर वह चल नहीं पाया। आधे अधूरे नाम के साथ उपनाम लगाने वाले बहुत चले।

इनमें रांघेय 'राघव', योगश 'अटल', शंकर 'क्रन्दन', रमेश 'मयंक', कनक 'मधुकर', घनश्याम 'शलभ', इकबाल 'सागर' ऐसे नाम हैं जो एक मूल तथा दूसरा उपनाम से बने हैं। इन्हें केवल एक नाम लेने से कोई नहीं जान पाता। दोनों नाम साथ-साथ लेने से ही इनकी पहचान बनी है। इनमें प्रकाश 'आतुर' भी एक नाम है।

राजस्थान साहित्य अकादमी में जितने भी अध्यक्ष बने हैं, उनमें डॉ. प्रकाश 'आतुर' सर्वाधिक चर्चित, सर्वाधिक यारबाज और सर्वाधिक सबके चहेते रहे।

छोटे, बड़े, नवीन किसी भी साहित्यकार के साथ वे बड़े प्रेम, आत्मीयता और इज्जत के साथ मिलते थे और सबको आदर दिये रहते थे। उनके समय में यदि किसी ने तनिक नाराजगी भी ली तो वह उसका वैयक्तिक मिजाज और कुछ अन्य कारण रहा। इस बात पर प्रकाशजी ने एक मनोविनोद के प्रसंग में चुटकी लेते कहा था- 'राजा-महाराजाओं के जमाने में कोई रानी रूठ जाती। कई बार कारण का पता नहीं लगता तो उसके लिए एक अलग से महल बनवा दिया जाता। ऐसे जगह-जगह रूठी रानी के महल आज भी खंडहरों के रूप में मिलते हैं। मैं अपने ऐसे मित्रों के लिए क्या कहूं, कुछ समझ नहीं पा रहा।'

प्रकाशजी जहां भी होते वहां चारों ओर यारबाजी, ठहाके, रंग-व्यंग्य की घोटेबाजी; कहूं तो लंगोटियाबाजी चलती रहती। अधिक सयाने और अपने को प्रतिष्ठित मानने वाले वहां से किनारा करते होते। चेटक सर्कल पर किशन पान वाले के वहां संध्या को बरसों तक हमारी पानबाजी चली। उनकी सिगरेटबाजी भी मैंने देखी है। हम सबमें नंदबाबू का तड़का अधिक रंग दिये रहता।

कभी कोई नया व्यक्ति आ जुड़ता तो प्रकाशजी मुंह में पान की गिलौरी दबाये बड़े उत्साहजनित प्रेम से उसका स्वागत करते। कहते- 'यों तो आपके लिए जान हाजिर है मगर अभी तो पान हाजिर है' कहकर किशन बाबू से पान लेकर उसका मुंह पानदार करते। वहीं पास में मेरा मंगल मुद्रण छापाखाना था। प्रकाशजी कभी वहां आ जाते। खूब गपशप होती। प्रिंटर देवेंद्र से 'पान हाजिर करिये अन्दाता' कहकर पान मंगवाते। मुझे कहते, 'आपका तो जीवन ही व्यर्थ जा रहा है। न दारू, न पान, न सिगरेट। कभी तो भोग लो, लोकदेवता!'

हमारी महफिल में कभी दारूबाजी नहीं रही। बाद में तो वे प्रतिदिन ही दारू के आदी हो गये थे। एक दिन जब उनका साथ देने वाला कोई नहीं मिला तो मुझे अपने घर ले गये। कहां, 'मैं तो दारू पीऊंगा। आप भी चाहें तो घुटक या फिर चुस्की ही लेना।' मैंने मना कर दिया तो बोले, 'चलो बैठना ही सही। मैं अकेला नहीं पीना चाहता। कोई न कोई मेरे सम्मुख बैठा हुआ हो तो मुझे अच्छा लगता है।' मैं उनके साथ गया। उनका घर मेरे पास ही है। अलग से मेरे लिए नमकीन रखी और वे बर्फ के साथ पीते रहे। मेरे जीवन की इस प्रकार की यह पहली और अंतिम घटना ही रही।

कुछ दिनों बाद वे अधिक बीमार हो गये। डाक्टर ने तो उन्हें पीने के लिए सख्त मना कर दिया था। इसकी सूचना उन्होंने मुझे भी दी और कहा भी कि पीना-वीना कतई बंद कर दिया है पर अधिक दिन नहीं बीते, उन्होंने कहा, 'सूना-सूना जीवन व्यर्थ लग रहा है। कुछ भी हो, अब पीना बंद नहीं करूंगा यार! मस्ती के साथ जी रहे हैं तो मस्ती के साथ मर भी जायेंगे। क्या फरक पड़ता है।' वे डूबते गये और अन्ततः 16 सितम्बर 1989 को हम सबसे सदा के लिए विदा ले ली।

उनके जाने के बाद पहली पुण्यतिथि पर मैं, नंदबाबू के पास गया। वे बोले, 'अकादमी ने भी उनकी सुध नहीं ली जिसके वे वर्षों तक अध्यक्ष रहे।' मैंने कहा, 'अपन ही बात करलें।' मैंने अपने कुछ प्रश्न रखे, उन्होंने उनके जो जवाब दिये वे यहां प्रस्तुत हैं-

**महेन्द्र :** साहित्य में डॉ. आतुर को आप किस रूप में महत्वपूर्ण मानते हैं?

**नंद :** मुख्यतः तो वे कवि ही थे, किन्तु इसके साथ-साथ वे और भी बहुत कुछ थे। कभी-कभी इतने प्रबल रूप में थे कि यह असमंजस होता था कि कहीं वे वही तो नहीं हैं जैसे एक सम्पादक के रूप में, एक गद्य लेखक के रूप में, एक राजनीतिकर्मी के रूप में, एक अध्यापक के रूप में और एक बड़ी भूमिका का निर्वाह करने वाले इस रूप में कि बिना किसी जिद्द या आग्रह के मित्रों और रचनाकर्मियों को मिलाने वाले के रूप में लेकिन बुनियादी रूप में एक संवदेनशील कवि-व्यक्तित्व ही उनका मेरे सामने है। इस बात को मैंने बार-बार कहा भी है। उनके लेखन में भी यह बात आती है। एक उदाहरण देकर इस बात को और भी स्पष्ट करें तो हम देखेंगे कि प्रकाश 'आतुर' का गद्य-लेखन बहुत विश्लेषणात्मक और एक तार्किक गद्य-लेखन की तरह नहीं है बल्कि एक तरह से एक समग्र परिदृश्य को समेटते हुए आता है जो कृतित्व का भी गुण है।

**महेन्द्र :** राजस्थानी साहित्य अकादमी को प्रकाश 'आतुर' की ऐसी क्या देन रही कि जिसके कारण वे लम्बे समय तक याद किये जाते रहेंगे?

**नंद :** कार्यक्रम तो पहले की ही तरह चलते रहे पर एक गुणात्मक अन्तर आया है। दो बातें उनमें हुईं। एक तो उन सब प्रगतिशील तत्वों को जोड़कर खुला मंच बनाया और साहित्य सम्बन्धी विचारों को वर्जित नहीं किया। उन पर कुछ लोगों ने यह लांछन लगाया कि वे सबको प्रसन्न करने में लगे रहे, यह मिथ्या था।

क्योंकि जिन लोगों को प्रकाश ने अकादमी की सरस्वती सभा और संचालिका में स्थान दिया, वे सब एक या दूसरे अभिप्राय में प्रगतिशील और मार्क्सवादी थे। गोष्ठियों और आयोजनों में भी जो मुख्यतः पत्रवाचक थे या जिनकी साझेदारी होती थी वे प्रायः प्रगतिशील विचारों के थे। प्रकाश ने एक व्यापक और प्रगतिशील वैचारिकी के लोगों को जोड़ने की निरन्तर चेष्टा की और आकस्मिकता का अंश कम से कम होने दिया।

'मधुमती' को भी हम देखें तो वह एक बड़े मानवीय सरोकारों की पत्रिका बनी और उसमें अधिकांशतः वे लेखक, कवि और कहानीकार छपे जो यह विश्वास करते थे कि साहित्य भी व्यवस्था में, बदलाव में और मनुष्य का नया चित्र बनाने में मदद कर सकता है। दूसरी बात जो उनके व्यक्तित्व से जुड़ी थी वह थी साहित्य और साहित्यकारों के प्रति अटूट आस्था।

यद्यपि वे कई बार साहित्यकारों के व्यवहार से खिन्न होते थे, किन्तु बुनियादी रूप से उनकी रचनाधार्मियों के प्रति अटूट आस्था थी। इस आस्था में उन्होंने अकादमी की व्यवस्थामूलक प्रकृति को एक सीमा तक तोड़ दिया था। ऐसा बहुत से साहित्यकारों को प्रतीत होने लगा कि इस व्यवस्था में भी एक लचीलापन है जिसे हम अपने पक्ष में काम ले सकते हैं।

यह बात भी प्रकाश के समय अधिक उभर कर आई कि अकादमी एक लोकतंत्रात्मक व्यवस्था की पुष्टि करती है। इस बात को एकबार प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवरसिंह तथा कई विद्वानों ने संकेतित किया था। मेरी दृष्टि में इन कारणों से पिछली अकादमी से प्रकाश के अध्यक्षता काल की अकादमी भिन्न हो गई और भविष्य में भी अकादमी का जो कोई अध्यक्ष हो वह यदि इस स्वरूप को नये रूपाकार नहीं देता तो मेरे सहित बहुत से साहित्यकारों के मन में यह लगलगा रहेगा कि अकादमी के साथ उनकी दोस्ती टूट गई है।

**महेन्द्र :** प्रकाशजी यदि राजनीति में नहीं होते तो क्या वे साहित्यकार के रूप में इतने चर्चित हो पाते?

**नंद :** एक ही मुझे भय है कि वे अध्यक्ष हो पाते या नहीं। अकादमी के अध्यक्ष होने में उनका राजनीति में होना काम आया किन्तु अध्यक्ष होने के साथ-साथ उन्हें एक घाटा भी उठाना पड़ा और यह घाटा उनका साहित्यकर्म से कुछ अलग हो जाने जैसा था।

राजनीति ने प्रकाश आतुर की साहित्यिक ख्याति को फैलाने में कोई मदद की हो, यह मानने का मेरे पास कोई कारण नहीं है और दरअसल वे राजनीति से कोई बड़ा लाभ उठा भी नहीं सके।

प्रकाश के पास कविता पाठ करने का एक कौशल था। आप देखेंगे कि वे मंच के अच्छे कवियों में हुआ करते थे लेकिन इसका अभिप्राय यह नहीं कि वे कोई तुक्कड़ कवि थे।

अपनी कविता में वे एक दुख दरिद्र रहित जिन्दगी का सपना बनाते थे। उनकी कविता में जीवन संघर्ष को आगे बढ़ाने वाले तत्व मौजूद होते थे और एक आवेशपूर्ण पाठ भी होता था। इस सबके कारण वे अपनी कीर्ति का पर्याप्त विकास कर सके।

वे गाते नहीं थे किन्तु अपने वाचन के द्वारा एक भावावेश की रचना करते थे। इस भावावेश के कारण श्रोतागण एक सम्मोहन की स्थिति में आ जाते थे। प्रकाश की तरह कविता वाचन करने वाले मैंने ज्यादा कवि नहीं देखे। दिनकरजी और शिवमंगलसिंह 'सुमन' को जरूर अच्छा कविता पाठ करते हुए मैंने सुना है। मैं उसी कोटि में प्रकाश को भी रखता हूं।

**महेन्द्र :** उनकी रचनाधर्मिता पर आप सर्वाधिक किसका प्रभाव मानते हैं?

**नंद :** 'मैं युग चारण' काव्य संकलन में प्रकाश ने अपने साहित्यकर्म पर प्रभाव डालने वाले बहुत से साहित्यकर्मियों का उल्लेख किया है, किन्तु मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आजादी के बाद वाले समाजवादी कवियों का उन पर विशेष प्रभाव रहा। इस प्रकार की कविताओं में हम पाते हैं कि एक नैतिक ओजस्विता के साथ जुड़ता रचनाकर्मी का मुख्य सरोकार हो जाता है।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 01 अगस्त 2018

## सम्पादकीय

# साहित्य शॉल और मशाल

कभी प्रेमचन्द ने साहित्य को समाज और राजनीति के आगे जलने वाली मशाल कहा था। आज स्थिति इससे उलट-पुलट की है। साहित्य जो सबसे आगे था, सबसे पीछे धकेल दिया गया। वह उलट भी दिया गया है और पलटा भी खा गया है। समाज और राजनीति दोनों साहित्य से आगे निकल गये हैं। जो साहित्य इन दोनों से सम्मानित हुआ करता था, आज वह उन दोनों का सम्मान करता लग रहा है। आगे चलने वाली मशाल दोनों के गले में शॉल डाल उनकी आरती उतार रही है।

यह विडम्बना ही है कि रचना को राजनीति से झुलसना पड़ रहा है। विचारधारा उस पर भारी पड़ दबोच रही है। उसकी वास्तविक अन्तश्चेतना तथा अस्मिता खतरे में पड़ गई है। रचनाकार जिस तपाई सफाई और स्वच्छन्दता से सृजनशील बने रहकर अन्याय, शोषण, बेईमानी, विषमता के चलते उत्पीड़ितों, उपेक्षितों, दलितों, अल्पसंख्यकों पर हो रहे अन्याय और अत्याचारों की अपनी सशक्त लेखनी से खबर लेता था, आज उसकी स्वायत्तता तथा प्रतिबद्धता पर लगाम लगा दी गई है।

रचना अब कई तरह के लोभन और प्रलोभन के बीच बाजार और उत्पाद की वस्तु बनने को लाचार है। सत्ता का फड़फड़ाता पत्ता उसे अपनी हवा और धुन-ध्वनि देने में लगा हुआ है। इसलिए रचनाकार कई प्रकार की चुनौतियों से जूझ रहा है। उसके साथ एक ओर भूमण्डलीकरण की भूकम्पी है तो उदारीकरण का उदर भी उसे बेचैन कर रहा है। विचारहीन व्यवस्था, अवसरवादी महत्वाकांक्षा, संवेदनहीन शुचिता, अन्यमनस्क बनी आत्म मुग्धता के बीच रचनाकार का मन विध्वंसक स्थितियों में बेसहारा बना हुआ है।

यही कारण है कि रचना और पाठक का रिश्ता भी व्यक्तिगत राग-द्वेष में अविश्वसनीय हो गया है। ऐसे में साहित्य अपनी विचारणा की प्रतिबद्धता, सूझबूझ की स्फूर्तना तथा दायित्व बोध के जन-गण-मन से भटकन लिये है।

क्या कारण है कि प्रेमचन्द के गोदान, प्रसाद की कामायनी और निराला की राम की शक्तिपूजा के बाद वैसा सृजन नहीं देखा गया। न ही इनका ठीक से मूल्यांकन ही हो पाया बल्कि हम उन्हें वह सम्मान भी नहीं दे पाये जिसके वे सहज ही सर्वथा समर्थ अधिकारी थे। अपने को बड़ा बनाने की जी-तोड़ कोशिशों के बीच जो वस्तुत: बड़े हैं उनकी बड़ाई करने और उन्हें बड़ी आंखों में बिठाने की अपनी ओछी और खण्डित नजरों में हम न किसी को नजराना भेंट कर पाये, न किसी की नजरों में ही चढ़ पाये और न किसी की नजर बांधने में भी हमने अपनी काबलियत दिखाई। हमारी धुंधलाती नजर में यदि हम किसी चमक की अपेक्षा करें तो पहले नौ मन तेल इकट्ठा करना होगा और फिर रूठी राधा को भी मनाना होगा। अपनी असलियत पर अड़े बगैर कोई भी सृजनधर्मी अपने सृजन का स्वाभिमान नहीं पा सकता।

# मैं जो भी हूं, कौन हूं?

-खुशालनाथ 'धीर'-

प्रश्न कभी अनुत्तरित
नहीं रहते
काया की छाया सा
उत्तर उसी में
निहित रहता है-
मैं कौन हूं!
स्वामी हूं, खुशाल हूं, नाथ हूं
धीर हूं, फिर भी प्रश्न है
लोगों में चर्चित हूं, ख्यात हूं
कुछ की तो यही ईर्ष्या है-
मैं स्वामी हूं, इसी से विख्यात हूं!
लोग मुझे नहीं
मेरी कलम को जानते हैं
मानते हैं
मैं तो एक सहज प्राणी हूं
शब्द रंजन हूं
चार हाथ-पांव का
चौपाया नहीं मनुष्य हूं
कोई जले तो जले मुझे क्या!
मैं जो भी हूं
खुली किताब सा हूं
------
धीर हूं! स्व में पर को
समाविष्ट करता हूं,
लोग समझते हैं-
मैं जो लिखता हूं
वह तो शब्द रंजन है
उन पर भी घटा है
सत्य साक्षात् है
यही स्वानुभूति परानुभूति है
लिखता हूं
बेबाक लिखता हूं
निर्भीक हो लिखता हूं!
साफ-सटीक लिखता हूं
मैं कौन हूं!
यह मुझ से ज्यादा
मुझे जानने वाले जानते हैं
मैं कौन हूं!
प्रश्न कभी अनुत्तरित
नहीं रहते- मैं कौन हूं!

# ना चैनल्स ना अखबार, खबरों का विस्तृत है भण्डार

-मुकेश मूंदड़ा-

संसार में मानव जीवन के उद्भव के साथ ही संचार का भी अस्तित्व रहा है। आरंभ में जब ना लिपि थी, ना भाषा एवं ना ही संचार के साधन; तब भी मानव प्रतीक चिन्ह, भाव भंगिमा एवं चित्रों के माध्यम से मन की भावना को समझाता था। अन्य जीव जन्तु जिनके पास ना भाषा है ना लिपि वे भी विभिन्न ध्वनियों, रासायनिक जैविक क्रियाओं एवं अनेक मूक माध्यमों से संचार करते रहे हैं। संप्रेषण ना केवल हमारे अस्तित्व के लिए वरन् हमारे विकास के लिए भी आवश्यक है।

आधुनिक युग में संचार की प्रक्रिया एवं तकनीकी में बहुत प्रगति हुई है जिसने मानव सभ्यता को विकास की उंचाइयों तक पहुंचा दिया है। मूकाभिव्यक्ति से मानव मौखिक संवाद तक पहुंचा और फिर उसने मुद्रण युग में टेलीग्राफी, टेलिफोन एवं उपग्रह के माध्यम से टेलीविज़न कम्प्यूटर और इंटरनेट तक का सफर तय किया। वाई फाई, टू-जी, फोर-जी, फाईव-जी के प्रयोगों ने संप्रेषण के संसार में नवीनतम गेजेट्स के माध्यम से एक नई दुनिया स्थापित कर दी है। यह दुनिया सोशल नेटवर्किंग की है जिसे चलाते इंसान हैं पर उसे पंख सोशल मीडिया देता है। उसकी उड़ान की गति दुनिया के किसी भी वाहन से तेज है। सोशल नेटवर्किंग का यह माध्यम सबसे नया है पर है सबसे तेज।

सोशल नेटवर्किंग सेवा एक ऑनलाइन सेवा है जो लोगों के मध्य सामाजिक संबंधों को बनाये रखने अथवा परिलक्षित करने पर केंद्रित है। उदाहरण के लिए ऐसे व्यक्ति जिनकी रूचियां व गतिविधियां समान हैं वे इन सोशल साइट्स के माध्यम से एक-दूसरे से परस्पर संबंध बनाए रखते हैं। अधिकांश नेटवर्किंग सेवाएं वेब आधारित होती हैं और प्रयोगकर्ता को ऑनलाईन डिवाइस द्वारा इंटरनेट का प्रयोग करते हुए एक-दूसरे से संपर्क स्थापित करने का साधन प्रदान करती हैं। सोशल नेटवर्किंग सेवाएं व्यक्ति केंद्रित होती हैं और यह प्रयोगकर्ता को व्यक्तिगत विचारों, गतिविधियों, घटनाओं एवं रूचियों को बांटने की सुविधा प्रदान करती है।

सोशल नेटवर्क के बढ़ते प्रभुत्व ने पत्रकारिता शब्द की परिभाषा ही बदल दी है। आज का पत्रकार खादी के कुर्ते पजामे की बंदिशों से मुक्त जीन्स, ब्राण्डेड शर्ट और महंगं मोबाईल फोन के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश करता है। यह इस बात की भी पुष्टि करती है कि आज की पत्रकारिता बहुत संपन्न हो चुकी है और बिना धन के सुचारू रूप से चल रही है। एक ओर जहां पत्रकारिता का जन्म काग़ज पर खिलती हुई स्याही के रूप में हुआ वहीं आज सोशल नेटवर्किंग के साये में नवीनतम ग्राफिक्स, एनीमेशन, टू-डी और थ्री-डी, फोर-डी इफेक्ट्स ने ले ली है।

पत्रकारिता का एक दौर वह भी था जहां अखबार साप्ताहिक था और हमें हफ्ते में एक बार ही खबरें मिला करती थीं। अब सोशल नेटवर्किंग के प्रभाव से प्रत्येक व्यक्ति 'रिपोर्टर' है। ब्रेकिंग न्युज़ के साथ मिनट-मिनट में, पल-पल, देश-विदेश के कोनों के साथ हर पंचायत, हर गांव, हर तहसील यहां तक कि ढाणी तक की खबरें हमें मिल जाती हैं। कहां दुर्घटना घटी, कहां जाम लगा, कहां रास्ते बन्द हैं, हर तरह की खबर हमें हर पल में मिलती रहती है।

सोशल नेटवर्किंग जहां त्वरित सूचनाओं का सहज माध्यम बन गया है वहीं मनमर्जी से दिये जाने वाले संदेशों के कारण कई बार यह मुसीबत की सबब भी बन चुकी है जिसके चलते कोई बड़ी घटना हुई हो या नहीं एक व्यक्ति उसे वायरल कर अकारण समाज में भूचाल ला देता है।

इसे यूं भी कह सकते हैं कि 'घटना बाद में होती है खबर पहले छप जाती है।' खबरों के स्केल के लगातार बढ़ने से आज अखबारों, पत्रिकाओं और न्यूज चैनल्स की सोच में भी अधिक बढ़ोतरी हुई है। आज दिन की जितनी खबरें नहीं होतीं उससे अधिक चैनल उपलब्ध हैं। रेडियों की दुनियां भी बदल सी गयी है। पहले जहां एक ओर विविध भारती को बड़े ही चाव से सुना जाता था वहीं अब एफएम चैनल्स का बोलबाला है।

सोशल नेटवर्किंग पर पत्रकारिता का सीधा मतलब जनता की अपनी आवाज है। वह आवाज़ जो अपने ही लोगों से निकल कर उसे ही सुनायी जाती है। ना कोई चैनल, ना कोई अखबार, सिर्फ खुद की आवाज़ और खबरों को विस्तृत भण्डार। सोशल नेटवर्किंग पर पत्रकारिता के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही पहलू हैं। सकारात्मकता में पहली बात यह कि यहां फीडबैक तत्काल मिलता है और संवाद दो-तरफा होता है। दूसरी बात पोर्टेबिलिटी की है अर्थात भारी भरकम कैमरे, ट्राईपोड़ की जगह डिजिटल डिवाईस हर स्थान पर आसानी से ले जाया जा सकता है। तीसरी अवेलेबिलिटी कहीं भी किसी भी जगह, समय पर उपलब्ध है। चौथा महत्वपूर्ण इंटरएक्टिवीटी है जो कि रिडर्स को एंगेज रखती है।

नकारात्मक बातों में गंभीरता की कमी, अफवाहों और गलत खबरों को बढ़ावा मिलना, पत्रकारिता की मर्यादा में रह कर लिखने की बाध्यता का खत्म होना, खबरों को सनसनीखेज बनाने की प्रकृति में बढ़ावा, निजता का हनन् और सबसे बड़ी बात पत्रकारों की पहचान का खतरा बढ़ा है क्योंकि सोशल नेटवर्किंग पर हर कोई पत्रकार है।

बहरहाल सोशल नेटवर्किंग पर पत्रकारिता के महत्व एवं उपयोगिता को स्वीकारने में ही फायदा है क्योंकि ज़माना फेसबुक, ट्वीटर, लीकेंडीन और वाट्सएप का है। आने वाले समय में सोशल नेटवर्किंग पर पत्रकारिता का स्वरूप कैसा होगा; इसका अंदाज लगा पाना कठिन है क्योंकि यह हर रोज बदल रही है परन्तु एक बात तय है कि सोशल नेटवर्किंग पर पत्रकारिता काफी तेज रफ्तार से मजबूत हो रही है और लगातार होती रहेगी।

# ऋषभदेव की पड़

भीलवाड़ा के कलापुरोधा निहाल अजमेरा ने अपनी धर्मनिष्ठ अभिरूचि तथा जैन-संस्कृति संरक्षण के प्रति आत्मीय लगाव के कारण पड़ कला की उदात्त एवं धर्मजीवी श्रेष्ठ परम्परा में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की पड़ बनाकर एक आदर्श तथा नवीन उद्भावना की स्थापना की है। इस स्तुत्य कलाकर्म में उन्हें आचार्य विद्यानन्दजी, सुधासागरजी एवं चन्द्रप्रभजी की सत्प्रेरणा तथा मंगल आशिष प्राप्त हुआ है।

निहालजी ने बताया कि युगपुरुष भगवान ऋषभदेव षट्कर्म के प्रथम उपदेशक थे। उनके द्वारा प्रतिपादित बहत्तर कलाओं में से मुख्य विशिष्ट सौलह कलाएं इस पड़ में चित्रित की गई हैं।

आठ कलाएं पड़ की ऊपर की बाउण्ड्री के मध्य में क्रमश: लेख, जनवाद, अन्न विधि, वस्त्र विधि, आमरण विधि, स्त्री लक्षण, पुरुष लक्षण एवं नगर नियोजन तथा शेष आठ गंधर्व कलाएं क्रमश: रूप, नाट्य, गीत, वादित्र, पुष्कर गत, स्वर गत, सम ताल एवं गाथा ताल नीचे की बाउण्ड्री के बीच दर्शाई गई हैं। मध्य में युवराज ऋषभ को अपनी दोनों पुत्रियों में ब्राह्मी को लिपि तथा सुन्दरी को अंक विद्या का प्रशिक्षण देते दर्शाया गया है। उनके समीप नीलांजना नृत्य-निरत बताई गई है।

इसके नीचे षट्कर्म असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, संगीत, नृत्य तथा शिल्प, चित्रकला के दृश्य अंकित हैं। पड़ में जैन प्रतीकों एवं चिन्हों का बहुत ही बेहतरीन ढंग से समायोजन किया मिलता है। निहालजी की भावना है कि हमारे देश तथा विदेश में धर्म, संस्कृति एवं कलाप्रेमी बन्धु इस चित्रावली को जिनालयों, विद्यालयों, मांगलिक भवनों तथा कार्यालयों में शोभित करें तो जीवजगत पर इसका अच्छा असर पड़ेगा तथा मंगल-मांगल्य फलेगा।

पोथीखाना

# अमृत कलश की खोज

बालसाहित्य के लेखन से लेकर उसके उन्नयन, संवर्धन, प्रचार-प्रसार तथा विचार-मंथन की दिशा में विगत दो-तीन दशक से राजकुमार जैन 'राजन' का नाम बड़े सशक्त रूप में उभरांकन लिये है। पूरे देश-प्रदेश में अपनी सोचबद्ध सार्थक यात्राओं से उन्होंने अनेक ख्यात से लेकर नवोदित लेखकों तक पहुंचकर कई दृष्टियों से बालसाहित्य को समझा है।

वे कई स्कूलों में भी अपना लक्ष्यबद्ध मिशन लेकर जाते हैं। बालकों के बीच संवाद करते हैं। उनके मन को टटोलते हैं और उनकी पसंदगी के अनुरूप साहित्य के रचनाकारों से लेखन कराते हैं। स्वयं उनकी पुस्तकें छापते-छपवाते हैं और निशुल्क वितरित कर आत्म मुग्ध होते हैं।

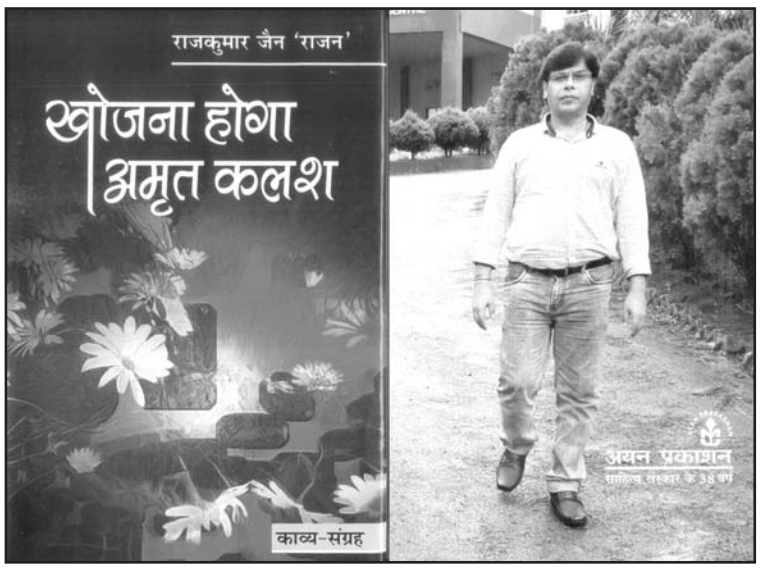


श्री राजन से मेरा परिचय उदयपुर में उनके पठनकाल से है। वे तब भी साहित्य के कुमार थे और इसी हेतु वे पहलीबार मुझसे मिले। बाद में तो मैं स्वयं भी अम्बामाता स्कीम के एक कमरे में रहते उनसे मिलता रहा।

यह वह समय था जब साहित्य-सृजन की कोई विरासती देन उनके पास नहीं थी। आकोला जैसा छोटा सा गांव यों तो अति प्राचीन है जहां के रंगरेज छींपा बहुत प्रसिद्धि लिये थे। वहां की छपाई तब पूरे मेवाड़ में प्रसिद्धि के परवान पर थी। ऐसे 25-30 परिवार तो मैंने भी देखे पर अब इक्के-दुक्के परिवार ही हैं जो यह काम करते हैं लेकिन प्रयोग करते-करते नई छापें-भातें निकाल आकर्षक छपाईदार मोहक कपड़ों के लिए आज भी वहां के थान बाजार बनाये हुए हैं।

हाथ में बसन्त, स्मृतियों के पांव, आशा की लौ जलती रहेगी, हारा नहीं हूं, एक सूरज उगाना, सूखे फूलों की गंध, उम्मीदों की रोशनी टूट नहीं सकती, एक नई सुबह

बाल साहित्य के क्षेत्र में राजकुमार जैन 'राजन' ने तो उनसे भी बड़ा बाजार बनाया है जो व्यापारिक दृष्टि से कतई नहीं, बाल मनरंजन और मनोविज्ञान की दृष्टि से सुनाम लिये है। साहित्य के माध्यम से बालकों में मूल्यपरक शिक्षा, परम्परा, संस्कृति, भाईचारा, सौहार्द्र, स्नेह, देशसेवा तथा जीवन निर्माणकारी बोध एवं समझ लेकर बच्चे सच्चे राष्ट्रसेवी बनें, इस हेतु उनकी स्वयं की लिखी तीन दर्जन मानक पुस्तकें हैं जो कई जगह, जगह-जगह प्रशंसित होकर सम्मानित भी हुई हैं।

जब मुझसे उन्होंने इस सम्बन्ध में लिखने को कहा तो मैं सहसा सहज ही तैयार हो गया। इस कड़ी में उन्होंने मेरी 'गवरी' नामक पोथी छापी और अब वे कठपुतली कला पर एक प्रकाशन दे रहे हैं। मुझे प्रसन्नता है कि परम्परागत साहित्य-सृजन, सांस्कृतिक सरोकारों से आवेष्ठित रंजन तथा जो जीवनपद्धति लोकसाहित्य में प्रचलित है, उस पर उन्होंने मेरा लेखन चाहा है।

राजकुमार जैन 'राजन' ने कविता से अधिक कहानी-कथन को माध्यम बनाकर सृजन किया है जो बच्चों में सर्वाधिक स्वीकार्य भी है पर कविता के माध्यम से अपनी बात कहने से एक भिन्न प्रकार का प्रभाव बच्चे ग्रहण करते हैं और बहुत सारी शिक्षा-सीख वे सहज ही अंगीकार कर लेते हैं।

सरल सुरीली और लयबद्ध कविताएं हर वर्ग के बच्चों को सोहती भी हैं, आकर्षित भी करती हैं और उनसे उनका खासा मनबहलाव भी होता है। ऐसी कविताओं से बच्चों में कई तरह की चीजों के प्रति अनायास ही वे अंकुर प्रस्फुटित होते हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता भी है।

इस दृष्टि से 'खोजना होगा अमृत कलश' नाम से उनका काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ है। इसमें राजन का मुख्य स्वर बालकों में जीवनमूल्यों के प्रति सजगता रखते हुए बच्चे कैसे अपने जीवन को सही दिशा देते हुए सार्थक समाज के निर्माण में सहभागी बन सकते हैं, रहा है।

वर्तमान समाज और जीवन-परिवेश में बच्चे जो कुछ अपनी आंखों से देख रहे हैं, कानों से सुन रहे हैं और भोगते हुए अनुभवों को अलसा रहे हैं तब वे कैसे स्वत: प्रेरित होकर अपने आत्म चैतन्य को आलोकित करें। इसके लिए राजकुमार 'राजन' ने 'अन्धकार के बीज' जैसे शीर्षकों में अपने हौंसले बुलन्द रखने का आह्वान करते लिखा है-

*मन में जब जलती है मशालें तब*
*खुद-ब-खुद बदलने लगती हैं*
*इतिहास की इबारतें*
*और इसके लिए -*
*हथेलियों में सूरज उगाना होगा*
*बस एक मुट्ठी रोशनी*
*तुम धरती में उगाओ*
*कुछ शब्द बीजों की खाद डालो*
*धैर्य के पानी से सींचो*
*तब तुम्हें मिलेगा*
*सफलता का दैदीप्यमान सूरज*
*जो जीवन को भर देगा प्रकाश से।*

ऐसी साहसजनित शौर्यपरक हुंकार भरती कुछेक कविताएं राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान, रामधारीसिंह 'दिनकर', जयशंकर 'प्रसाद', सोहनलाल द्विवेदी जैसे धारदार कवियों और फिल्मों में प्रदीप, भरत व्यास ने लिखकर पूरे राष्ट्र में धूम मचाई थी। स्वाधीनता आन्दोलन में ऐसी कविताओं ने ही जन-जन में जोश और प्राण फूंक कर आजादी का शंखनाद किया था।

ऐसा ही नहीं, वर्तमान जीवन की हड़बड़ाहट, आपाधापी, विसंगतियां, वैमनस्य, आपसी ईर्ष्या द्वैष, स्वार्थ लोलुपता, निराशा, हताशा, गरीबी, बेरोजगारी, भूखमरी पर भी उन्होंने जमकर कटाक्ष किया है। उनकी 'हाथ में बसन्त', 'आशा की लौ जलती रहेगी', 'हारा नहीं हूं मैं', 'हथेली में सूरज उगाओ', 'एक नई सुबह' तथा 'उम्मीदों की रोशनी टूट नहीं सकती' शीर्षक कविताएं निराशा, थके, हारे तथा अनमने, अंधेरे से उबरकर नया हौंसला, नई स्फूर्ति, नया जोश और नई जवानी देती है।

इसके लिए जरूरी है कि हम हाथ पर हाथ धरे नहीं रहें। हमारी खोजक दृष्टि को हमें पैनी बनानी होगी और यह जानना होगा कि वह सबकुछ जो हमें चाहिये, हमारे ही पास है, कहीं और नहीं लेकिन उसके लिए हमें निरन्तर प्रयास करना होगा। तपना-खपना होगा। अपने सोच और समझ को बुलन्दी देनी होगी।

शिखर दिखाई दे रहा है जैसे तेजस्वी सूरज, तपते पहाड़, उफनती नदियां हैं। हमें अपनी समझदारी से उन्हें वरण करना होगा। ये सब हमारे जीवन और जिंदादिल समय के लिए अमृत कलश हैं। उस कलश की खोज हमें ही करनी है। यही कवि राजन का और उनकी कविताओं का सुखधर उद्देश्य है।

इस 120 पृष्ठीय, 240 रूपये मूल्य की नयनाभिराम आकर्षक कवर वाली पुस्तक के प्रकाशक अनय प्रकाशन, 1/20, महरौली, नई दिल्ली-30 हैं।

# मेड़तिया वीरवरों के उदात्त चरितों को खनखनाता गौरव ग्रंथ

'मेड़तियों के गौरव गीत' नामक यह ग्रन्थ डॉ. जयपालसिंह राठौड़ द्वारा सम्पादित है। इसमें मेड़तिया राठौड़ों के अद्भुत शौर्य, परम पराक्रम तथा अजेय पौरूष को विविध डिंगल गीतों के माध्यम से वर्णित किया गया है। यह सामग्री अब तक विद्वानों की नजरों में नहीं थी। बड़े पुरुषार्थ, मनोयोग तथा लगन से विद्वान सम्पादक ने अपनी ज्ञानाराधनात्मक सूझबूझ तथा प्रखर पांडित्य के शील-संस्कारों से जिन रचनाकारों और उनके रचित गीतों की खोजना की वह एक नये इतिहास की ही सुरम्य रचना है। राजस्थान पूरे विश्व में शूरवीरों तथा शक्तिवंतों की वरेण्य भूमि के रूप में ख्यात-प्रख्यात रहा है। जो भी इस भूमि को स्पर्श करता है, इसकी माटी को सर्वप्रथम अपने भाल पर चढ़ाकर गौरवान्वित महसूस करता है। इस ग्रन्थ का प्रत्येक गीत उस गौरव को प्रत्यक्षदर्शी कराता है।

जबरा महत्वपूर्ण पक्ष तो यह भी है कि सम्पादक डॉ. जयपालसिंह, सह सम्पादक डॉ. महिपालसिंह राठौड़ और सम्पादक सहयोगी डॉ. गोविन्दसिंह राठौड़ स्वयं ही उस मेड़तिया वंश की 31वीं-30वीं पीढ़ी के होनहार वंशज हैं जिनके रगत में अपनी उसी परम्परा का वही शौर्य अब स्याही बन कलमधर के रूप में निखरा है जो आज की यशस्वी आभा और आवश्यकता का महनीय मण्डन है।

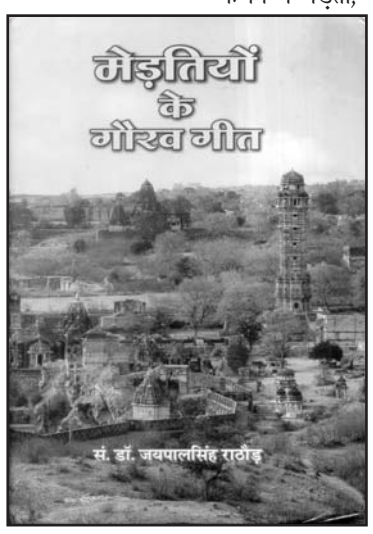


सम्पादकीय में ग्रन्थ का वैशिष्ट्य इस प्रकार वर्णित है- 'प्रस्तुत ग्रन्थ में विभिन्न उदात्त चरित्र वाले शौर्य पुरुषों से सम्बन्धित 135 गीत, कवित्त, सबद, बेलि व दोहे प्रकाशित हो रहे हैं। मेड़तिया के गौरव गीतों के रचयिता महाकवि पृथ्वीराज राठौड़, सूर्यमल्ल मिश्रण, बांकीदास, दुरसा आढ़ा व जाड़ा मेहडू जैसे कविगण रहे हैं। वहीं स्वामीभक्त ठाकुर शेरसिंह रिंया पर कवयित्री बरजू बाई ने भी डिंगल गीत रचा है जो नायक के उदात्त चरित का वर्णन करता है। गीतों का भावार्थ सरल हिन्दी में दिया जा रहा है जिससे हिन्दी का सामान्य पाठक भी डिंगल गीतों का भावार्थ समझे सके।

गीतों का काव्यात्मक सौन्दर्य अद्भुत है और हमारे लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। इन गीतों में उस समय की भाषा, सामाजिक परिवेश व सोच प्रकट होती है। सर्वप्रथम मेड़तिया राठौड़ों के कुल आराध्य श्री चारभुजाजी का गीत दिया जा रहा है। वह अद्भुत है। विभिन्न गीतों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि जीवन के उदात्त मूल्यों हेतु जीवन का जो समर्पण महापुरुषों द्वारा किया जाता रहा है उसी का यशगान गीतों में मुखरित है यथा सनातन धार्मिक मूल्यों हेतु प्राणोत्सर्ग करने वाले गऊ, ब्राह्मण, मन्दिर, तीर्थ, बालक, स्त्री, निर्बल की रक्षार्थ जो शासक स्वयं युद्ध में उपस्थित होकर लड़ते थे उनका आंखों देखा वर्णन भी गीतों में हुआ है, वह केवल कल्पना आश्रित नहीं है। वह यथार्थ है परन्तु काव्यात्मक सौन्दर्य के साथ एक आदर्श क्षत्रिय की पहचान क्या हो; इन वीर गीतों में दिखाई देती है। वह वचन पालक हो, धर्म की रक्षार्थ सर्वप्रथम बलिदान देने के लिए उत्साही हो, धर्म-युद्ध में कभी विमुख न हो, सत्य का पुजारी हो, ईश्वर भक्त हो, दानवीर हो, उज्ज्वल चरित्र वाला हो, परोपकारी हो व प्रजा पालक हो, ऐसे क्षत्रिय वीरों व शासकों की प्रशस्ति इन गीतों में वर्णित हुई है। समाज में जब भी धर्म, सत्य, मानव मूल्यों व परम्परा की चर्चा होगी इन वीर गीतों का अनुशीलन पठन आवश्यक समझा जायेगा।'

डॉ. महिपालसिंह राठौड़ ने अपने कथन में मेड़ता, मेड़तिया तथा उस वंश में हुए वीरवरों की सुदीर्घ परम्परा एवं उनके उदात्त जीवन के वैशिष्ट्य को रेखांकित किया है।

ऐसी सामग्री राजस्थान में उन अनेक स्थानों में बिखरी पड़ी है जो माने हुए महत्वपूर्ण ठिकाने रहे। ये ठिकाने अपने आप में बेजोड़ इतिहास बनाने वाले रहे। बहुत सी सामग्री समय के प्रवाह में काल-कोठरियों की घुटन लेती दफन हो गईं लेकिन तब भी यदि डॉ. राठौड़ जैसे माई के लाल सुध लेने का बीड़ा उठायें तो हाथ लग सकती है जैसे गड़ा धन हाथ लग आता है।

कई बार लगता है जिस इतिहास को हम पूरा हुआ समझ बैठते हैं वह लिखा ही नहीं गया है। ऐसे में मेड़तियों के गौरव गीत में संग्रहीत एक-एक गीत इतिहास, संस्कृति, शौर्य, समाज आदि की संरचना के महत्वपूर्ण दस्तावेज बनते हैं। इनके आधार पर गर्व करने के हमें कई सूत्र कई सारे नये गवाक्ष खोलते हमारे अध्ययन को पुख्ता और विराट बनाते हैं।

कुल 422 पृष्ठों का यह ग्रन्थ सुपठनीय के साथ-साथ सुदर्शनीय है जो सम्पादक के दादोसा ठा. धनसिंहजी राठौड़ को समर्पित है जिन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध में ब्रिटिश आर्मी के साथ अफ्रीका तथा यूरोप के युद्ध-अभियानों में भाग लिया साथ ही यूरोप में जर्मन सेना से हैण्ड ग्रेनेड लगने पर गम्भीर रूप से घायल होते अदम्य साहस एवं वीरता के साथ डटे रहे। उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए उन्हें पांच बार स्टार और पदक प्रदान किया गया। राजस्थानी ग्रंथागार सोजतीगेट जोधपुर से प्रकाशित यह ग्रन्थ 600 रूपये मूल्य का है।

**- म.भा.**

# टाटा का 'विंगर 15 सीटर' लॉन्च

**उदयपुर।** टाटा मोटर्स ने राजस्थान में अपने नये उत्पाद 'विंगर 15-सीटर' मोनोकॉक डिजाइंड बस को लॉन्च किया है। यह 15-सीटर वाहन यात्रियों को

बेहद आराम देगा। इसका शुरूआती मूल्य 12.05 लाख रूपये है और यह राजस्थान में 15 डीलरों और टाटा मोटर्स आउटलेट्स में उपलब्ध होगा। टाटा मोटर्स की पैसेंजर कॉमर्शियल व्हीकल बिजनेस यूनिट में सेल्स एवं मार्केटिंग प्रमुख संदीप कुमार ने कहा कि विंगर 15एस का आंतरिक वातावरण सुखद है, जो भीतर आराम और सड़क पर उन्नत अनुभव प्रदान करता है। इसमें आरामदायक पुश बैक सीटें, इंडीविजुअल एसी वेंट्स, सीट की प्रत्येक पंक्ति के लिये यूएसबी चार्जिंग पॉइंट हैं, जो छोटी या लंबी दूरी की दोनों यात्राओं को यादगार बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, विंगर की मोनोकॉक बॉडी का निर्माण नॉइज, वाइब्रेशन एवं हार्शनेस (एनवीएच) के न्यूनतम लेवल को सुनिश्चित करता है। इसका एंटी-रोल बार्स तथा हाइड्रोलिक शॉक एब्जोर्बर्स के साथ स्वतंत्र फ्रंट सस्पेंशन बम्प- फ्री राइड देता है।

टाटा विंगर 15एस एक अद्भुत उत्पाद है, जो टूर एंड ट्रेवल ऑपरेटर्स की उत्पाद प्रदर्शन और ईंधन दक्षता की आवश्यकताओं को सम्बोधित करेगा। टाटा विंगर 15एस यात्री को यात्रियों को शानदार आराम और ऑपरेटर को लाभ देने के लिए डिजाइन किया गया है। इस वाहन के साथ 3 वर्ष या 3 लाख कि.मी. (जो पहले हो) की वारंटी दी गई है।

# वीज़ा पेवेव : भुगतान का बेहतर तरीका

**उदयपुर।** भारत में पिछले कुछ वर्षों में हमारी भुगतान करने की तकनीक व पद्धति में तेजी से बदलाव आया है। वीज़ा पेवेव कार्ड मौजूदा वीज़ा डेबिट कार्ड है, जो बैंक द्वारा जारी किया गया और संपर्क रहित तकनीक से अपग्रेड किया गया है। दो हजार तक लेनदेन के लिए, वीज़ा पेवेव कार्डधारक पिन प्रवेश किए बिना अपने संपर्क रहित कार्ड का उपयोग कर सकते हैं या लेनदेन रसीद पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

भारत और दक्षिण एशिया के वीज़ा ग्रुप कंट्री मैनेजर टीआर रामचंद्रन ने कहा कि संपर्क रहित भुगतान व्यवस्था व्यस्त खुदरा व्यापारों के लिए की गई है जहाँ गति और सुविधा दोनों महत्वपूर्ण है जैसे सुपरमार्केट्स, सुविधा स्टोर, पेट्रोल स्टेशन और त्वरित सेवा देने वाले रेस्त्रां। उपभोक्ता भी इस सुविधाजनक और सुरक्षित संपर्क रहित लेनदेन को अपना रही है। दो हजार से ऊपर के किसी भी लेनदेन के लिए, अतिरिक्त सुरक्षा और व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए आपका पिन पूछा जाएगा। एक संपर्क रहित कार्ड भी आपके चिप-आधारित कार्ड की तरह सुरक्षित है। यह वीज़ा द्वारा संरक्षित है जहां प्रत्येक लेन-देन में अनूठा और सुरक्षित एन्क्रिप्शन होता है, इसलिए कोई लेनदेन दो बार संसाधित नहीं किया जा सकता है। एक संपर्क रहित कार्ड का उपयोग करते समय, भुगतान की शुरुवात वीज़ा कार्ड रीडर मशीन में व्यापारी द्वारा सिंबल के साथ राशि डालने के बाद होती है।

# जगुआर एफ-टाइप की पेशकश

**उदयपुर।** जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने अत्याधुनिक फोर सिलेंडर इनजीनियम पेट्रोल इंजन की पेशकश कर एफ-टाइप के आकर्षण को और अधिक बढ़ा दिया है।

जगुआर लैंड रोवर लिमिटेड (जेएलआरआईएल) के प्रेसिडेंट और

प्रबंध निदेशक रोहित सूरी ने कहा कि पुरस्कार विजेता एफ-टाइप का दायरा अब एंट्री लेवल फोर- सिलेंडर मॉडल से लेकर जगुआर के 322 किमी प्रति घंटा, ऑल-वेदर सुपरकार-एफ-टाइप एसवीआर तक फैला हुआ है। 221 केडब्लू 2.0 लीटर टर्बोचार्ज्ड पेट्रोल मोटर से युक्त सभी एल्युमिनियन स्पोर्ट्स कारों में जगुआर की स्पोर्ट्स कारों का डीएनए मौजूद हैं। यह ज्यादा बेहतर एजिलिटी और बेहतरीन एफिशिएंसी एवं अफोर्डेबिलिटी प्रदान करती हैं।

इनजीनियम इंजन से समूचे वाहन के भार में 52 किलोग्राम की कटौती हुई है- इनमें से अधिकांश फ्रंट एक्सल हैं और यह फोर-सिलेंडर एफ-टाइप की बेहतरीन एजिलिटी की कुंजी है। नये इंजन से मेल खाती चेसिस की जबर्दस्त ट्यूनिंग स्टीयरिंग का शानदार रिस्पांस, बॉडी कंट्रोल और राइड कम्फर्ट प्रदान करती है। बेहतर ढंग से ट्यून किये गये एक्टिव एक्जॉस्ट एंट्री-लेवल एफ-टाइप मॉडलों में स्टैंडर्ड तौर पर दिये गये हैं, जबकि आर-डायनैमिक वैरिएंट्स में स्विच करने योग्य ऐक्टिव एक्जॉस्ट है जोकि एक शानदार ड्राइविंग अनुभव देता है। एफ-टाइप में 2.'0 लीटर इंजन की पेशकश करके बहुत उत्साहित हैं। इससे हमारे स्पोर्ट्सकार ब्रांड जगुआर के फैन्स एवं ग्राहकों के लिए और अधिक सुलभ होंगे। कार के उत्साही लोग निश्चित रूप से इस विशुद्ध एफ-टाइप की अपील से रोमांचित होंगे।

# सहाराश्री का ऐम्बी वैली में भव्य स्वागत

**उदयपुर।** माननीय सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के अनुसार ऐम्बी

वैली पुन: रूप से सहारा परिवार को दिए जाने पर सहारा इंडिया परिवार के प्रबंध निदेशक और अध्यक्ष 'सहाराश्री' सुब्रत रॉय का सहारा इंडिया परिवार के श्रमिकों तथा आसपास के 10 गांवों के सरपंचों और लगभग 1,000 से ज्यादा ग्रामीणों ने मिलकर स्वागत किया। स्वतंत्र भारत के इस पहले नियोजित पहाड़ी शहर में प्रवेश करने के बाद सहाराश्री ने भारत माता नमन स्थल पर फूलों से भारत माता के प्रति अपना आभार व्यक्त किया।

# यूएसएआईडी और डीएचएफएल में साझेदारी

**उदयपुर।** यू.एस. एजेंसी फॉर इन्टरनैशनल डेवलपमेंट (यूएसएआईडी) तथा दीवान हाउसिंग फाइनेंस कॉर्पोरेशन लि. (डीएचएफएल), ने आधिकारिक तौर पर टियर दो और टियर तीन श्रेणी के शहरों में स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं के लिए पूंजी की उपलब्धता को बेहतर बनाने के उद्देश्य से 10 मिलियन डॉलर की ऋण पोर्टफोलियो गारंटी पर हस्ताक्षर करने की घोषणा की। डीएचएफएल के संयुक्त प्रबंध निदेशक एवं सीईओ हर्षिल मेहता ने कहा कि यूएसएआईडी और डीएचएफएल के बीच हस्ताक्षरित जोखिम-सहभाजन समझौते के माध्यम से, ऋणदाता भारत में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र से जुड़े छोटे एवं मध्यम आकार के उद्यमों को 10 मिलियन डॉलर तक के ऋण प्रदान करने में सक्षम होगा, जिसमें महिला उद्यमियों को प्राथमिकता दी जाएगी।

यू.एस. के कौंसिल जनरल एडगार्ड किगन ने कहा कि इस साझेदारी के माध्यम से यूएसएआईडी और डीएचएफएल का उद्देश्य भारतीय स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के लिए, विशेष रूप से महिला उद्यमियों के लिए बाधाओं को तोड़ते हुए वित्तीय सहायता को कम जोखिम भरा बनाया जाए तथा इसकी पहुंच को बेहतर किया जाए, ताकि वे अपने स्वास्थ्य देखभाल उद्यमों एवं सेवाओं की स्थापना या विस्तार कर सकें, समुदायों में रोगों के निदान एवं उपचार में सुधार के लिए उपकरण खरीद सकें, तथा अपने उद्यमों की व्यवहार्यता में सुधार ला सकें। पूरे भारत में, खासकर राजस्थान, ओडिशा, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में विभिन्न उधारकर्ताओं के साथ सहयोग को मज़बूती प्रदान करना।

# ऑनलाइन खरीद से कम हो सकता है चिकित्सा खर्च

**उदयपुर।** केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा प्रकाशित नेशनल हैल्थ अकाउंट्स (एनएचए) के नवीनतम आंकड़ों से पता चलता है कि भारतीय परिवारों पर सबसे ज्यादा वित्तीय बोझ दवाओं का है। भारतीय परिवारों द्वारा किये जाने वाले कुल आउट-ऑफ-पॉकेट स्पेंडिंग (ओओपी) का लगभग 42 प्रतिशत हिस्सा दवाइयों को खरीदने में खर्च हो जाता है। लोग अपनी जेब से किए जाने वाले खर्च का लगभग 28 प्रतिशत हिस्सा निजी अस्पतालों में खर्च कर देते हैं। कुछ हद तक इस वित्तीय बोझ को कम करने के लिए लोग अब ऑनलाइन माध्यम के जरिए दवाएं मंगाना पसंद करने लगे हैं, क्योंकि ऐसा करना उन्हें आसान भी लगता है और ऑनलाइन फार्मेसियां निर्धारित ??दवाओं पर आर्डर से लेकर डिलीवरी तक आकर्षक ऑफर भी प्रदान कर रही हैं।

मेरापेशेंट ऐप के संस्थापक और अध्यक्ष मनीष मेहता ने कहा कि शारीरिक रूप से अक्षम और बुजुर्ग लोग, जिनके लिए यात्रा एक मुश्किल काम है, उनके लिए दवाएं ऑनलाइन ऑर्डर करना सुविधाजनक हो गया है।

असल में किसी को अब बाहर जाने और एक स्टोर से दूसरे स्टोर तक दुर्लभ दवाओं की तलाश करने की जरूरत नहीं होती। कैंसर और टीबी की दवाएं रोगियों को लंबी अवधि के लिए लेनी होती हैं। ऐसे मामलों में, ऑनलाइन ऑर्डर करते हुए दवाएं मंगाना अपने खर्च को कम करने के लिहाज से भी फायदेमंद है क्योंकि यह दवा कंपनियों और खुदरा विक्रेताओं के बीच सीधा संबंध कायम करता है। इस तरह असाधारण रूप से लंबी आपूर्ति श्रृंखला में भी कटौती हो जाती है जिसके कारण डिस्ट्रीब्यूशन सुपरवाइजर, थोक व्यापारी और फिर खुदरा विक्रेताओं के मार्जिन समाप्त किये जा सकते है।

# किसानों के लिए फसल बीमा योजना लागू

**उदयपुर।** निजी क्षेत्र में भारत की तीसरी सबसे बड़ी गैर-जीवन बीमा प्रदाता एचडीएफसी एर्गो जनरल इंश्योरेंस कंपनी को, राजस्थान सरकार द्वारा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) को लागू करने के लिये अधिकृत किया गया है। यह योजना बीकानेर, चित्तौड़गढ़, सिरोही, जैसलमेर, सीकर और टोंक में ऋणी एवं गैर-ऋणी किसानों के लिए खरीफ 2018 के लिये उपलब्ध है।

इस योजना के तहत अधिसूचित की गई निम्नलिखित फसलों के लिए इन जिलों में यह योजना लागू की जाएगी, बीकानेर में बाजरा, मूंगफली, ग्वार, मूंग, मोठ, तिल के लिए, चित्तौड़गढ़ में उड़द, कपास, मूंगफली, ज्वार, मक्का, धान, सोयाबीन के लिए, सिरोही में बाजरा, उड़द, कपास, मूंगफली, ग्वार, ज्वार, मक्का, मूंग, तिल के लिए, जैसलमेर में बाजरा, मूंगफली, ग्वार, ज्वार, मूंग, मोठ, तिल के लिए, सीकर में बाजरा, चवला, मूंगफली, ग्वार, मूंग, मोठ के लिए, टोंक में बाजरा, उड़द, मूंगफली, ग्वार, ज्वार, मक्का, मूंग, तिल के लिए।

पीएमएफबीवाई स्कीम सूखा, बाढ़, शुष्क काल, भूस्खलन, चक्रवात, तूफान, कीट एवं बीमारियों और कई अन्य क्षेत्रों जैसे बाहरी जोखिमों से फसल को होने वाले नुकसान के लिए किसानों का बीमा करती है। उपज में हुए नुकसान का निर्धारण करने के उद्देश्य से, राज्य सरकार इस योजना के लिए अधिसूचित क्षेत्रों में अधिसूचित फसलों पर फसल काटने के प्रयोग (क्रॉप कटिंग एक्सपीरिमेंट्स-सीसीई) के लिए योजना बनाएगी और उसका क्रियान्वयन करेगी। यदि सीसीई के आधार पर उपज डेटा कम हो जाता है, तो किसानों को उनकी उपज में कमी का सामना करना पड़ेगा जिसके लिए किसानों को दावों का भुगतान किया जाएगा।

यह योजना फसल चक्र के सभी चरणों के लिए बीमा कवर प्रदान करती है, जिसमें बुआई के पहले से लेकर कटाई और कटाई के बाद के जोखिम शामिल है। पीएमएफबीवाई योजना के तहत सभी उत्पादों को कृषि विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा अनुमोदित किया जाता है।

# 'टार्गेट का बादशाह' के छठे संस्करण में उदयपुर के डीलर सम्मानित

**उदयपुर।** भारत में डैकोरेटिव पेन्ट सैगमेंट के सबसे तेज़ी से बढ़ते ब्रांड कामधेनू पेन्ट ने बिंतन और सिंगापुर में आयोजित 'टार्गेट का बादशाह' के छठे संस्करण में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले चैनल पार्टनरों को सम्मानित किया। मैसर्स सचिन पेन्ट ने प्रतिष्ठित 'अवार्ड फॉर ऐक्सीलेंस' ग्रहण किया। उन्होंने बॉलीवुड अभिनेता अनिल कपूर के हाथों पुरस्कार पाया। 'टार्गेट का बादशाह' एक अभिनव स्कीम/प्रोग्राम है जिसके द्वारा सेल्स टार्गेट हासिल करके कामधेनू ग्रुप की वृद्धि में योगदान देने वाले डीलरों को पुरस्कृत किया जाता है। इस स्कीम के तहत डीलर न केवल किसी विदेशी पर्यटन स्थल पर ऑल पेड वैकेशन पाते हैं बल्कि उन्हें कई बॉलीवुड हस्तियों से मिलने का भी मौका मिलता है। इस प्रोग्राम/स्कीम के अंतर्गत देश भर के हाई परफॉर्मिंग डीलरों को विभिन्न श्रेणियों के तहत पुरस्कार दिए जाते हैं जैसे अवार्ड फॉर ऐक्सीलेंस, न्यू राइज़िंग स्टार, अवार्ड फॉर अचीवमेंट आदि।

इस साल 'टार्गेट का बादशाह' ईवेंट में बॉलीवुड सितारे माधुरी दीक्षित, सोनम कपूर व अनिल कपूर आए। कामधेनू लि. के चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर सतीश कुमारअग्रवाल तथा कामधेनू लि. के डायरेक्टर सौरभ अग्रवाल 600 डीलर/चैनल पार्टनर की उपस्थिति रही। सतीशकुमार अग्रवाल ने कहा कि कामधेनू में हम प्रत्येक चैनल पार्टनर व डीलर को कामधेनू परिवार का सदस्य मानते हैं। वे कामधेनू को घर-घर में पहचाना जाने वाला नाम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इसलिए हम उन्हें 'टार्गेट का बादशाह' जैसी अभिनव स्कीमों के जरिए प्रोत्साहन देते हैं।

# रिकॉर्ड्स इंटरनेशनल में भाणावत का नाम

**उदयपुर।** करेंसी मैन के नाम से विख्यात विनय भाणावत का नाम वण्डर बुक ऑफ रिकॉर्ड्स इंटरनेशनल क्रोयडॉन, लंदन में दर्ज किया गया। इसके भारत स्थित मुंबई के शाखा कार्यालय की अध्यक्षा नीलम ने बताया कि विनय भाणावत ने भारतीय करेंसी नोटों में मुस्लिम पवित्र अंक 786 संख्या वाले सर्वाधिक 92790 नोटों का संग्रह कर तीन मुस्लिम राष्ट्र दुबई, पाकिस्तान एवं बांग्लादेश का रिकॉर्ड तोड़कर वर्ल्ड रिकॉर्ड हिन्दुस्तान के नाम किया। इस उपलब्धि हेतु भाणावत को गोल्ड मेडल, स्मृति चिह्न एवं प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

# महिंद्रा 'फ्यूरियो' का अनावरण

**उदयपुर।** महिंद्रा ट्रक एंड बस डिवीजन (एमटीबीडी) ने इंटरमीडिएट कमर्शियल व्हीकल (आईसीवी) की अपनी नई रेंज 'फ्यूरियो' का अनावरण किया।

फ्यूरियो, आईसीवी सेगमेंट में कंपनी के आगाज का बिगुल बजाते हुए महिंद्रा को कमर्शियल व्हीकल की समूची रेंज वाली कंपनी के तौर पर स्थापित करने की कोशिश है।

महिंद्रा फ्यूरियो, 500 से अधिक महिंद्रा इंजीनियरों, 180 आपूर्तिकर्ताओं और 600 करोड़ रुपए के निवेश का सुफल है।

महिंद्रा एंड महिंद्रा लि. के प्रबंध निदेशक डॉ. पवन गोयनका ने कहा कि आईसीवी ट्रकों की नई फ्यूरियो रेंज का अनावरण हमारे ट्रक और बस व्यवसाय के लिए एक मजबूत कदम है। 'पिनिनफरीना' से प्रेरित डिजाइन के साथ, 'फ्यूरियो' हमारे लिए और शायद उद्योग के लिए एक गेम चेंजर बनने के लिए तैयार है, यह सबसे सुरक्षित, सबसे एर्गोनोमिक और आरामदायक केबिनों वाले ट्रक में से एक है जो नए मानकों को स्थापित करेगा। महिंद्रा एंड महिंद्रा लि. में मोटर वाहन क्षेत्र के अध्यक्ष राजन वाधरा ने कहा कि यह रेंज ग्राहकों की सामूहिक अंतर्दृष्टि पर आधारित है। फ्यूरियो की लॉन्चिग महिंद्रा की एचसीवी ट्रक रेंज ब्लेजो की सफलता के बाद आई है, ब्लेजो ने महिंद्रा के लिए पर्याप्त मात्रा में बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि की है। महिंद्रा एंड महिंद्रा लि. में महिंद्रा ट्रक, बस और निर्माण उपकरण प्रभाग के सीईओ विनोद सहाय ने कहा कि महिंद्रा ट्रक और बस डिवीजन में हमने अपने पोर्टफोलियो में सुधार किया है और हमारे ग्राहकों का भरोसा बढ़ाया है।

**हर दिल अजीत थे.....**

**( पृष्ठ तीन का शेष )**

इन कवियों ने नर-नारी के रिश्तों को भी थोड़ा कट्टरता से अलग हटकर देखने की कोशिश की और प्रेम के उदात्त प्रसंगों को जीवित रहने दिया। प्रकाश की कविता में ये दोनों पक्ष मौजूद हैं।

प्रकाश की बहुत सारी कविताओं में प्रेमानुभव की बहुत सी मूर्त स्थितियां हैं और एक बेचैनी भी है। वे रूप और बेचैनी के कवि रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' को शायद इसीलिए पसंद करते थे। गीतों की संवदेनशीलता उन्हें स्पर्श करती थी, क्योंकि वे स्वयं उस दुनिया में लम्बे समय तक जीना चाहते थे और इस रागात्मक दुनिया से अपना मोह टूटने नहीं देना चाहते थे।

आधुनिक कविता से वे कभी प्रसन्न नहीं थे लेकिन वे साहित्य के प्रजातंत्र में आधुनिक रचनाशीलता को आदर की दृष्टि से देखते थे। उनका विश्वास था कि पुरानी कविता के दिन फिर लौट आयेंगे। पुरानी कविता से मेरा तात्पर्य पुरातन कविता से नहीं बल्कि उस कविता से है जो 1950 से लेकर 1960 के आसपास की है।

**महेन्द्र :** प्रकाशजी को आप किस तरह याद करेंगे?

**नंद :** प्रकाश को हम कई तरह से याद कर सकते हैं। अपने व्यक्तिगत संदर्भों में और उनके सूफीयाना स्वभाव के संदर्भ में भी। प्रकाश ने एक महत्वपूर्ण टीम की शुरूआत की थी। वह थी अपने प्रांत के रचनाधर्मियों का आदर और उनकी कृतियों का आस्थावान पठन-पाठन तथा मूल्यांकन। वे इस बात का आग्रह करते रहे कि राजस्थान में साहित्यकारों का सम्मान बढ़े। उनकी दृष्टि में साहित्यकार को पढ़ा जाना ही उनका सबसे बड़ा सम्मान है।

हम अपने रचनाधर्मियों को जितना पढेंगे और उनकी जितनी प्रखर आलोचना कर सके उतनी ही प्रकाश 'आतुर' की स्मृति का आदर भी करेंगे। यह कहना आवश्यक है कि साहित्यिक वातावरण की रचना करना एक चुनौती भरा काम है क्योंकि वह संवेदनशील और निर्मम आलोचना दृष्टि से जुड़ा है। दुख है कि ये दोनों ही दृष्टियां आज की व्यस्तता में विलीन होती जा रही है।

प्रकाशजी को मैं जब भी याद करता हूं, एक हंसमुख सदाबहार खिलखिलाता चेहरा ही मुझे मुस्कान देता मिलता है। अब तो वे सब मित्र ही नहीं हैं। उन्होंने ही मुझे जयपुर में रांघेय राघव से उनके घर पर मिलाया था। अकादमी के कई कार्यक्रमों में ख्यात साहित्यकारों के साथ राजस्थान के बाहर भी जो साहित्यिक संग-रंग बने वे शायद ही कभी ढह पायेंगे।

**आखिरकार सपना पूरा हुआ. 21 जुलाई को शब्दांक भानावत का आईआईटी मुम्बई में दाखिला हो गया. इस अवसर पर शब्दांक के साथ उसके माता-पिता रंजना-डॉ. तुक्तक भानावत.**

# कृत्रिम अंग मापन शिविर आयोजित

**उदयपुर।** नारायण सेवा संस्थान ने जयपुर में दिव्यांग लोगों के लिए कृत्रिम अंग मापन शिविर का आयोजन किया। शिविर का आयोजन कृत्रिम अंगों के आकार को मापने के लिए किया गया था, जिन्हें दिव्यांगों की जरूरत के अनुसार बाद में विकसित किया जाएगा और इन्हें अलग-अलग लाभार्थियों को लगाया जाएगा। शिविर में 50 से अधिक दिव्यांगों ने भाग लिया। पांच डॉक्टरों की एक टीम ने शिविर का आयोजन किया जिसमें पहले कृत्रिम अंगों की जरूरत को परखा गया और फिर कृत्रिम अंगों को लगाने के लिए माप लिया गया।

अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि नारायण सेवा संस्थान दिव्यांगों और वंचित व्यक्तियों के उत्थान के लिए काम कर रहा है। ज्यादातर मामलों में, एक पूरी तरह से फिट कृत्रिम अंग के साथ कोई दिव्यांग एक सामान्य जीवन जीने में सक्षम है। हम दिव्यांगों को भौतिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाकर समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

नारायण सेवा संस्थान ने पिछले 30 वर्षों के दौरान 3.5 लाख से अधिक रोगियों के ऑपरेशन किये है। संस्थान में 1100 शैय्याओं वाला अस्पताल भी संचालित किया जाता है, जहां दिव्यांग लोगों का न सिर्फ इलाज किया जाता है, बल्कि उनके सामाजिक और आर्थिक पुनर्वास के प्रयास भी किए जाते हैं। नारायण सेवा संस्थान भारत, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, यूक्रेन, ब्रिटेन और यूएसए में रहने वाले और पोलियो और सेरेब्रल पाल्सी से पीड़ित शारीरिक रूप से दिव्यांग रोगियों और अन्य जन्म दिव्यांगता से पीड़ित लोगों के लिए उम्मीद की एक किरण बनकर उभरा है।

# 'ऑल-वुमन' कस्टमर रिलेशंस सेंटर का शुभारंभ

**उदयपुर।** भारत की सबसे बड़ी एकीकृत बिजली कंपनी, टाटा पावर ने पावर यूटिलिटी उपभोक्ताओं के लिए देश के पहले 'ऑल-वुमन' कस्टमर रिलेशंस सेंटर (सीआरसी) का उद्घाटन किया। टाटा पावर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक प्रवीर सिन्हा ने कहा कि मुंबई के अंधेरी (वेस्ट) में स्थित सीआरसी का संपूर्ण प्रबंधन सात महिलाओं की टीम द्वारा किया जायेगा जिन्हें उपभोक्ताओं को विभिन्न सुविधाएं जैसे बिजली आपूर्ति के नये कनेक्शन, मासिक बिल भुगतान और अन्य उपभोक्ता आधारित सेवाएं मुहैया कराने के लिए खासतौर से प्रशिक्षित किया गया है। ये महिलायें ग्राहकों की चिंताओं और सवालों को भी संबोधित करेंगी। सीआरसी की कार्यप्रणाली में सभी कार्य, जिनमें सुरक्षा भी शामिल है, महिलायें ही संभालेंगी।

प्रवीर सिन्हा ने कहा कि टाटा पावर का यह कदम महिलाओं को पावर सेक्टर में नौकरी के ज्यादा अवसर मुहैया कराने के अलावा उपभोक्ताओं के विभिन्न वर्गों की जरूरतों को पूरा करने में भी कारगर साबित होगा। पूरी तरह से महिलाओं द्वारा संचालित सीआरसी महिला उपभोक्ताओं को बेहतरीन सेवा प्रदान करने के लिए कंपनी का पहला प्रमुख कदम है। यह कंपनी की महिला कर्मचारियों को स्वतंत्र रूप से कस्टमर रिलेशंस सेंटर का प्रबंधन और संचालन करने की क्षमता के प्रदर्शन के लिए एक आदर्श मंच भी होगा।

# फ्लैगशिप प्रोजेक्ट 'निर्माण' का एलान

**उदयपुर।** बीओबी फाइनेंशियल सॉल्यूशंस लि. ने अपने फ्लैगशिप प्रोजेक्ट 'निर्माण' का एलान किया है, ताकि वह अपनी मूल कंपनी बैंक ऑफ बड़ौदा के योग्य रिटेल ग्राहकों को पूर्व-अनुमोदित क्रेडिट कार्ड जारी कर सके। बीओबी फाइनेंशियल ने बैंक ऑफ बड़ौदा और ट्रांसयूनियन सीआईबीआईएल के साथ एक त्रिकोणीय समझौता किया है, जिससे ट्रांसयूनियन सीआईबीआईएल क्रेडिट पॉलिसी और स्वामित्व क्रेडिट स्कोर को लागू करेगा। यह ट्रांसयूनियन सीआईबीआईएल क्रेडिटविजन के आधार पर होगा और इसका इस्तेमाल बैंक ऑफ बड़ौदा 5 रेंज के प्री-अप्रूव्ड ग्राहकों की पहचान के लिए किया जाएगा। बीओबी फाइनेंशियल सॉल्यूशंस के एमडी और सीईओ मनोज पिपलानी ने कहा कि प्रोजेक्ट 'निर्माण' के तहत हम बैंक ऑफ बड़ौदा के ग्राहकों को पूर्व अनुमोदित क्रेडिट कार्ड के रूप में वित्तीय लचीलापन उपलब्ध कराने के लिए वचनबद्ध हैं, ताकि क्रेडिट तक उनकी पहुंच त्वरित और सुविधाजनक हो सके। बैंक ऑफ बड़ौदा में 7.8 करोड़ से अधिक ग्राहक हैं और हम तेज गति से आगे बढ़ते हुए अधिक से अधिक लोगों को क्रेडिट कार्ड उपलब्ध कराने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

## डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 100 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

| पुस्तक का नाम | मूल्य |
|---|---|
| भारतीय लोकनाट्य | 1500/ |
| परंपरा का लोक | 475/ |
| आदिवासी लोक | 350/- |
| जनजाति जीवन और संस्कृति | 295/- |
| महाराष्ट्र के लोकनृत्य | 200/- |
| आदिवासी जीवनधारा | 395/- |
| जनजातियों के धार्मिक सरोकार | 150/- |
| राजस्थान के लोकनृत्य | 200/- |
| गुजरात के लोकनृत्य | 200/- |
| राजस्थान के लोक देवी देवता- | 150/- |
| भारतीय लोकमाध्यम | 75/- |
| अजूबा भारत | 200/- |
| पाबूजी की पड़ | 50/- |
| लोककलाओं का आजादीकरण | 250/- |
| उदयपुर के आदिवासी | 250/- |
| निर्भय मीरां | 250/- |
| रंग रूड़ो राजस्थान | 100/- |
| कुंवारे देश के आदिवासी | 100/- |
| जन्हें मैं जानता हूं | 100/- |
| जैन लोक का पारदर्शी मन | 150/ |
| गवरी | 60/ |

**हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें**

| | |
|---|---|
| **संरक्षक** | **11000/** |
| **विशिष्ट सदस्य** | **5000/** |
| **आजीवन सदस्य** | **3000/** |
| **शब्दरंजन के सहयात्री** | **1000/** |
| **साहित्यिक चौपाल** | **500/** |
| **वार्षिक संस्थागत** | **300/** |
| **वार्षिक व्यक्तिगत** | **250/** |

**शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।**

( **Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

**कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।**

**shabdranjanudr@gmail.com**

## आचार्य महाश्रमण का 2021 का चातुर्मास भीलवाड़ा में

**उदयपुर।** तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्य महाश्रमण ने वर्ष 2021 का चातुर्मास भीलवाड़ा में करने की घोषणा की। श्री मेवाड़ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी कॉफ्रेंस के अध्यक्ष राजकुमार फत्तावत ने बताया कि आचार्यश्री ने यह घोषणा तेरांपथ धर्मसंग के 259वें स्थापना दिवस एवं गुरु पूर्णिमा के अवसर पर चेन्नई स्थित माधावरम में चातुर्मास के दौरान रात्रि 8.27 बजे की। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2007 में आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने उदयपुर में तथा 2011 में आचार्यश्री महाश्रमण ने केलवा में चातुर्मास किया था। उसके बाद मेवाड़ की धरा पर 2021 में आचार्यश्री का चातुर्मास भीलवाड़ा में करने की घोषणा की। फत्तावत ने बताया कि आचार्यश्री को मेवाड़ में चातुर्मास करने हेतु वर्ष 2015 में नेपाल एवं 2017 में कोलकता में जैन श्रद्धालुओं की स्पेशल ट्रेन गई थी। भीलवाड़ा में चातुर्मास की घोषणा करने पर मेवाड़ संभागभर के श्रावक-श्राविकाओं में हर्ष की लहर है।

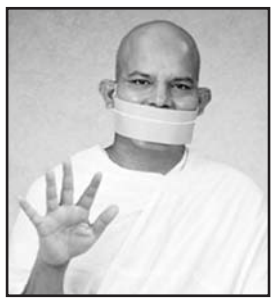

## सफलता के लिए रोड मैप जरूरी : कौशिक

**उदयपुर।** मानव को जीवन में सफलता के लिए रोड मैप बनाना चाहिए। बच्चों को शिष्टाचारी एवं अनुशासी होना चाहिए। शिष्टाचार से शिक्षा में गुणवत्ता आती है।

ये विचार एमएमपीएस स्कूल में जिले की आठ स्कूलों के 250 से अधिक बच्चों के लिए आयोजित वॉक्स पाप्युलि : दि डिबेटिंग फिनामिनन प्रोग्राम में मुख्य अतिथि हिन्दुस्तान जिंक के हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने व्यक्त किये।

श्री कौशिक ने कहा कि एक आदर्श विद्यार्थी में सीखने की जिज्ञासा होती है और आदर्श विद्यार्थी ही स्कूल में अच्छे संस्कार लेकर जीवन में कामयाब होता है। विद्यार्थी को अपने विषय की पकड़-पहचान कर भविष्य में कुछ बनने के लिए रोड मैप बनाना चाहिए।

कौशिक ने बच्चों को कम्यूनिकेशन एवं मिडिया के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि स्कूल टीचरों को बच्चों को उनकी हॉबिज, क्वालिटी, इम्प्रेशन, नैतिक जिम्मेदारी के बारे में बूस्ट करना चाहिए। उन्होंने पर्सनल्टी डवलेपमेंट के बारे में एक उदाहरण देकर समझाया कि जीवन में सफल होने के लिए स्वयं को आगे आकर प्रयास करने होंगे।

स्वयं को अभिप्रेरित होना होगा। बच्चों को अपने पंसद के सबजेक्ट के अनुसार कॉलेज में प्रवेश लेना चाहिए और उसी के अनुकूल तैयारी करना चाहिए। प्रारंभ में महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल के प्रिसिंपल आदित्य पालीवाल ने पवन कौशिक को बुके देकर स्वागत किया।

## 'पंचमार्कड कॉइन्स ऑफ राजस्थान' का विमोचन

**उदयपुर।** महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी श्रीजी अरविन्दसिंह मेवाड़ द्वारा जयपुर निवासी प्रेमलता पोखरना की अंग्रेजी में लिखी पुस्तक 'पंचमार्कड कॉइन्स ऑफ राजस्थान' का विमोचन फाउण्डेशन किया गया। पोखरना के इस पुस्तक में करीब 350 पृष्ठों में राजस्थान के अनेकों हिस्सों, संग्रहालयों में प्रदर्शित सिक्कों के अलावा, खुदाई से मिले सिक्कों की श्वेत-श्याम चित्रण के साथ जानकारी दी है। राजस्थान की पूर्व विरासतों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों में बनाए सिक्कों एवं उनका प्रचलन का भी इसमें विवरण दिया गया है।

उल्लेखनीय है कि महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन, उदयपुर द्वारा प्रेमलता पोखरना को वर्ष 2007 में उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए महाराणा कुंभा अवार्ड से सम्मानित किया गया था।

## लखनऊ में श्री कृष्णप्रतापसिंह व्याख्यानमाला आयोजित

लखनऊ में 10 जुलाई को श्री कृष्णप्रतापसिंह स्मृति अध्यात्म चिंतन व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। प्रारम्भ में डॉ. विद्याविन्दुसिंह ने स्वागत करते हुए कहा कि परमार्थ चिन्तन के विचार और संदेश हमारे आकर ग्रन्थों से लेकर लोक परम्परा तक में मिलते हैं।

इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में समर्पित भाव से संलग्न दस विभूतियों को सम्मानित किया गया। ये थे- डॉ. दाऊजी गुप्त, डॉ. नीरजा माधव, पं. रघुराज दीक्षित 'मंजु', हनुमानप्रसाद अवस्थी, सुरेशकुमार सिंह, पद्मा गिडवानी, राकेशसिंह, प्रो. आभा अवस्थी, डॉ. अभिजीत चन्द्रा तथा मनोरमा श्रीवास्तव।

समारोह में डॉ. विद्याविन्दुसिंह लिखित समीक्षा के आलोक में, अवधी वाचिक कथालोक : अभिप्राय: चिन्तन तथा विद्याविन्दुसिंह की 21 कहानियां, संत विवेक नामक स्मारिका, ओंकारनाथ द्विवेदी द्वारा सम्पादित अभिदेशक पत्रिका एवं प्रदीपकुमार अग्रवाल लिखित मदन माधुरी का लोकार्पण हुआ।

मुख्य अतिथि पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी ने परमार्थ चिन्तन पर शाश्वत चेतना के बारे में बताते हुए कहा कि भारत में परमार्थ चिन्तन की परम्परा प्राचीनकाल से ही चली आ रही है। बीज वक्तव्य देते हुए श्रीधर पराडकर ने कहा कि भारत में परमार्थ को बहुत महत्त्व दिया गया है लेकिन भारतीय दर्शन में यह प्रस्थान मात्र है, गंतव्य का चरम लक्ष्य नहीं। मालिनी अवस्थी एवं डॉ. रवीन्द्र शुक्ल ने भी विचार व्यक्त किये।

लोकमत हिन्दी डॉट कॉम के सम्पादक आनन्दवर्द्धन सिंह ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। इस अवसर पर डॉ. अवधेन्द्रप्रताप सिंह, दीपासिंह, ज्योतिसिंह, डॉ. भारतीसिंह, डॉ. करुणा पाण्डेय, डॉ. अन्जलि अस्थाना, डॉ. संगीता शुक्ला, अनिल मिश्र, मानसीसिंह, सुधीर पाण्डेय, महेशचन्द्र द्विवेदी, राकेशकुमार मित्तल, मदनमोहन सिन्हा 'मनुज', डॉ. टी. एन. सिंह, डॉ. पंकजसिंह, डॉ. चन्द्रमणि शर्मा, डॉ. रामकठिन सिंह, शिवमोहनसिंह, प्रेमचन्द्र सैनी, श्रीकृष्ण सिंह 'अखिलेश', श्रीमती उषा बाजपेयी, डॉ. अनिल मिश्रा, डॉ. सत्येन्द्रकुमार सिंह, डॉ. कैलाशदेवी सिंह, परशुराम पाल, अनिलकुमार पाण्डेय, वी. के. दीक्षित, डॉ. निर्मलासिंह 'निर्मल', शिवशरण दीक्षित, पद्मनसिंह, सुधासिंह, शीलेन्द्रसिंह चौहान, डॉ. महेन्द्रप्रताप सिंह, राज बृजराज 'राजा झण्डी', राकेश तथा अनेक प्रबुद्ध मनीषी विद्वानों, प्रशासनिक अधिकारियों, राजनीतिज्ञों और साहित्यकारों की महत्वपूर्ण उपस्थित रही। अंत में विजय त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया जबकि संचालन अमिता दुबे ने किया।

**- प्रस्तुति - सुधीर पाण्डेय**

## मालू ने बिखेरा लंदन से दुबई तक राजस्थानी लोकनृत्यों का जादू

वीणा समूह के अध्यक्ष के.सी. मालू ने लंदन के कई शहरों से लेकर संयुक्त अरब अमीरात तक राजस्थानी बोली की मिठास, यहां की गौरवमयी परम्परा, तीज-त्यौहार, लोकसंगीत और नृत्य की जो रंगीनियां बिखेरी वह वहां के निवासियों में सदैव के लिए स्मरणीय हो गई।

श्रीमालू ने 22 दिनों तक कैब्रिज, एडिनबर्ग, रेविन्टसन, इनवरनेस समेत संयुक्त अरब अमीरात में राजस्थानी भाषा के प्रचार-प्रसार में कोई कसर नहीं रखी। लंदन के नागरेचा हाल में प्रवासी राजस्थानी सांस्कृतिक पुनर्जागरण जीमण कार्यक्रम में बच्चों ने राजस्थान के लोकनृत्य के रंग बिखेरे वहीं महिलाओं ने घूमर नृत्य का लालित्य छलकाया। मालू ने बताया कि दुबई के राजस्थान बिजनेस एण्ड प्रोफेशनल्स ग्रुप, जैन सोश्यल ग्रुप और मारवाड़ी युवा मंच के साझे में आगामी दीपावली के आस-पास राजस्थानी घूमर नृत्य समेत तीज, गणगौर, पर्व मनाया जायेगा। अबुधाबी में मारवाड़ी युवा मंच और सीए एसोसियेशन जैसे संगठनों ने भी राजस्थानी भाषा की मान्यता को लेकर सक्रियता दर्शायी है। लंदन में मई में घूमर नृत्य को वे अपने जलसे में शामिल करेंगे।

राजस्थानी फाउंडेशन की ओर से भारतीय दूतावास, नेहरू सेंटर, भारतीय विद्या भवन में राजस्थानी लोकसंस्कृति से लबरेज सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। सुजानगढ़ के इन्द्रकुमार सेठिया उनकी पत्नी भारती सेठिया, राजस्थानी फाउंडेशन की सचिव वर्षा दहार, सुजानगढ़ क्षेत्रीय महासंघ की निदेशक निर्मला बांठिया, विद्या भवन के संस्थापक नंदा कुमार और हरेन्द्र जोधा ने कार्यक्रमों में मंचीय शोभा द्विगुणित की।

## सदैव के लिए मौन हो गये प्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन'

हिन्दी साहित्य में लोकधर्म के अग्रणी पुरोधा प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन' 20 जुलाई को हम सबसे विदा हो गये। उन्होंने नेपाल के महेन्द्र मोरंग कालेज से अध्यापकीय सेवा शुरू की। फिर वे विराटनगर कॉलेज में हिन्दी अध्यापक बने। क्रान्ति के दिनों में फणीश्वरनाथ रेणु से जुड़े और मारे गये गुलफाम पर बनी फिल्म 'तीसरी कसम' मेंश्राजकपूर को मैथिली की मौलिक शब्दावलियों से सम्पन्न कुछ संवाद बोलने के तरीके सिखाये।

बौद्ध संस्कृति पर कई सेमीनार करवाये और 'बोधिचक्र' नामक पत्रिका का सम्पादन-प्रकाशन किया। महनार के स्वतंत्रता संग्राम के हिस्सेदारों पर 'सेनानी' नामक एक पुस्तक का प्रकाशन किया। साहित्य आकादमी के सहयोग से 'मैथिली लोकगाथा अनुशीलन' नामक उनकी एक पुस्तक प्रकाशित हुई। कई टेलीफिल्मों तथा वृत्तचित्रों में वे लेखक और अभिनेता के रूप में जाने गये। 'सलहेस, लोरिक और बसावन' नामक रेडियो नाटकों को रेडियो पटना के हिन्दी एवं मैथिली नाटक विभाग ने कई बार प्रसारित किया।

श्री मौन सांस्कृतिक कार्यक्रमों से गहरा लगाव रखते थे। उनके साहित्यिक अवदानों पर तथा उनके समूचे व्यक्तित्व पर पिछले वर्ष ही 'सारस्वत अक्षरदीप' नाम से एक ग्रन्थ का प्रकाशन किया जिसका विमोचन बंगाल के राज्यपाल केसरीनाथ त्रिपाठी ने किया।

कहते हैं कि वे बड़े बेटे प्रकाशकुमार की अस्वस्थता से आहत हो गये थे। एक ही घर से दो मरीज अस्पतालों के चक्कर लगाने लगे। वे लगातार कमजोर होते गए और अन्तत: वे मौन बने रहे। उन्होंने अपने हाथ से संकेत कर मुंह से हल्की सी आवाज निकाली और सदैव के लिए मौन हो गये।

**-अश्विनीकुमार आलोक**

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।